गोपालसहस्त्रनाम

तेज कुमार बुक डिपो (प्रा.) लि.
१, त्रिलोकी नाथ रोड
लखनऊ

ॐ

श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्र

भाषाटीकासहित

लेखक,

रामधन शुक्ल

पोस्ट बहरामघाट, जिला बाराबंकी
अवधदेश

—:०:—

प्रकाशक

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी—नवलकिशोर बुकडिपो, लखनऊ

सन् १९९५ ई०

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा
तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लि० लखनऊ में मुद्रित

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

—:o:—

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

❀ समर्पण ❀

देवेश शूलपाणे ! सत्त्वरजतमरूपिन् !

आपका एक दासानुदास अपनी बर्बरता दिखलाता हुआ श्रीगोपालजी महाराजाधिराज के पवित्र यश के वर्णन की भाषा-व्यवस्था निजकृत समझ आपके चरणारविन्दों में अर्पण करने को उद्यत है।

हे वृषभध्वज ! सुरासुरनमस्कृत महादेव !

यह सब आपकी ही माया का विभव तथा उससे उत्पन्न महामोह की महिमा है।

हे सृष्टिस्थितिसंहारकर्तः !

यह सृष्टि आपकी ही है। इसके अन्तर्गत का एक कीटानुकीट प्रमादवश श्रीगोपालजी की महिमा को निज भाषा वर्णित समझ आपके चरणारविन्दों में अर्पण करता है। ऐसी दशा में अपनी वस्तु का अर्पण सदा ही स्वीकृत होता है।

हे जगद्धातः !

यह दास की पुष्पाञ्जलि स्वीकृत हो।

भवदीय किंकरानुकिंकर
रामधन
पोस्ट बहरामघाट, जिला बाराबंकी
अवधदेश

भूमिका ।

श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्र का वर्णन श्रीसम्मोहनतंत्र में है। यह हरिहरात्मक देव की दिव्य स्तुति है। इस स्तुति में प्रायः सभी अवतारों का वर्णन है। इसमें परमेश्वर के एक सहस्र नाम हैं। उन नामों में कुछ नाम ऐसे हैं जिन्हें संसारी जन प्रायः जानते हैं और कुछ नाम ऐसे हैं जो आराधकों के अतिरिक्त दूसरों के श्रवणगोचर भी न हुए होंगे, भाव जानना तो असम्भव ही है।

इन श्रीगोपाल महाराज के नामों का भाव सुनने तथा पढ़ने का सौभाग्य भावीवश भगवत् की असीम कृपा से मुझे प्राप्त हुआ है। परन्तु उससे इस दीनजन को संतोष नहीं हुआ। क्योंकि उसमें पांडित्य का चमत्कार था। यों तो परमेश्वर का गुणानुवाद जिस रूप में जितना ही कहा जाय उतना ही दिव्य है। इस स्तोत्र में बहुत से नाम कई बार कहे गये हैं। उन नामों का अलग-अलग अर्थ कर देना पांडित्य है। हाँ, प्रसंग को ध्यान में रखते हुए जो अर्थ किये जायँ वे अवश्य ही संतोषप्रद होंगे। यदि पूर्वापर से पृथक् कोई नाम दूसरी बार कहा गया है तो भले ही दूसरा अर्थ किया जा सकता है।

यदि यह प्रश्न उठाया जाय कि एक प्रकार के नामों की द्विरावृत्ति अर्थभेद ही के निमित्त की गई है तो दूसरी बात है। परन्तु ऐसी दशा में भी पूर्वापर का विचार न रहने से पाठकों के चित्त में खटक जरूर हो जायगी। यदि यह कहा जाय कि ये विष्णुभगवान् के नाम हैं, इनमें दूसरे रूप का समावेश नहीं हो सकता तो ऐसी दशा में पक्षपात प्रतीत होगा; क्योंकि ईश्वर में द्वैत नहीं है। यदि यह कहा जाय कि इस स्तोत्र में विष्णु जाप्य तथा शिव जापक हैं, अपने नाम का जप कैसे सम्भव है तो ऐसी दशा में सोऽहं शब्द का अर्थ ही बिगड़ जायगा।

अस्तु यह भगवान् की लीला है कि इतना अबोध पुरुष ऐसे अथाह समुद्र में गोता लगाकर दिव्य रत्न निकालने का साहस करे। ऐसा दिव्य रत्न कि जिसका एक-एक अक्षर महापापनाशक है। जब मैं यह सोचता हूँ तो अथाह समुद्र में डूब जाता हूँ। कैसे पार पाऊँगा। इसमें सिवाय उपहास के और कुछ न होगा। ऐसी दशा में बुद्धि बार-बार प्रेरित करती है कि तू साहसकर कूद, पार करनेवाले श्रीगोपाल महाराज हैं। काम करना मनुष्य का कर्तव्य है। तेरा प्रयास तो जिज्ञासु, शान्त विष्णुभक्तजनों के आनन्दार्थ है। इसी आधार पर यह दीनजन प्रारम्भ करता है। आशा है कि सज्जनजन इसकी भूलों को सुधारकर पढ़ लेंगे।

इस स्तोत्र के हर एक नाम पर क्रमशः एक से लेकर सौ तक नम्बर होंगे। यही क्रम दसों शतक का होगा। श्लोकों के नीचे वही नाम के ऊपर का अंक देकर भाषा में हर एक नाम का अर्थ लिखा है। फिर उसके नीचे क्लिष्ट नामों के नम्बर देकर हर एक नाम के संस्कृत शब्दों का पृथक्-पृथक् अर्थ भाषा में लिख दिया गया है, जिससे यह विदित हो जायगा कि इस नाम का यह अर्थ कैसे हुआ। यथासम्भव गुप्त शब्दों का कोश भी लिखा गया है, जिसमें शब्दों के अर्थ में किसी प्रकार का सन्देह रहे। किं बहुना विज्ञेषु इत्यलम्

सज्जनों का दयापात्र,

रामधन

श्रीगोपालसहस्रनाम

भाषाटीकासहित

❀ श्रीगोपालो जयति ❀

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम् ।
ब्रह्माण्डाऽखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः ॥ १ ॥
त्वमेव पूज्यसे लोकैर्ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः ।
नित्यं पठसि देवेश कस्य स्तोत्रं महेश्वर ॥ २ ॥

रमणीय कैलास पर्वत के शिखर पर श्रीपार्वतीजी श्रीमहादेवजी से प्रश्न करती हैं हे कि स्वामी ! आप अखिल ब्रह्मांड के नाथ, सृष्टि और संहार के कर्ता ॥ १ ॥ और सब लोकों तथा ब्रह्मादिक देवताओं से पूजित हैं। हे देवेश ! हे महेश्वर ! फिर आप नित्य किसका स्तोत्र पढ़ते हैं ॥ २ ॥

आश्चर्यमिदमत्यन्तं जायते मयि शंकर ।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिन्धि मे प्रभो ॥ ३ ॥

श्रीमहादेव उवाच

धन्यासि कृतपुण्यासि पार्वति प्राणवल्लभे ।
रहस्यातिरहस्यं च यत्पृच्छसि वरानने ॥ ४ ॥
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ५ ॥
दत्ते च सिद्धिहानिः स्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ।
इदं रहस्यं परमं पुरुषार्थप्रदायकम् ॥ ६ ॥

हे कल्याण के दाता ! यह मुझे बड़ा आश्चर्य है। इस हेतु हे प्राणेश ! हे महाप्राज्ञ प्रभु ! मेरा यह संशय मिटाओ ॥ ३ ॥

श्रीमहादेवजी बोले--हे प्राणवल्लभा पार्वती ! हे वरानने! तुम पुण्यरूप तथा धन्य हो, जो तुम अत्यन्त गुप्त विषय का प्रश्न करती हो ॥ ४ ॥ हे महादेवि ! स्त्रीस्वभाववश बार-बार पूछती तो हो, परन्तु इसे यत्नपूर्वक अत्यन्त गुप्त रखना ॥५॥ क्योंकि देने से सिद्धि की हानि होती है। इस हेतु यत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिए। यह रहस्य अत्यन्त पुरुषार्थ का देनेवाला है ॥ ६ ॥

धनरत्नौघमाणिक्यतुरंगमगजादिकम् ।
ददाति स्मरणादेव महामोक्षप्रदायकम् ॥ ७ ॥
तत्तेऽहं संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ।
योऽसौ निरंजनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः ॥८॥
संसारसागरोत्तीर्णकारणाय सदा नृणाम् ।
श्रीगंगाद्रवरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति ॥ ९ ॥
ततो लोका महामूढा विष्णुभक्तिविवर्जिताः ।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः ॥१०॥
निरंजनो निराकारो भक्तानां प्रीतिकामदः ।

स्मरणमात्र से ही धन, रत्नों के समूह, माणिक्य तथा घोड़े-हाथी इत्यादि देता है और महामोक्षप्रद है ॥ ७ ॥ वह हम तुमसे कहते हैं। हे प्रिये ! एकाग्रचित्त से सुनो। जो निरंजन देव चित्स्वरूपी जनार्दन भगवान् हैं ॥ ८ ॥ जो सदा मनुष्यों को संसार-सागर से तार देने के कारणरूप हैं, जो श्रीगंगाजी के जलबिन्दुरूप से तीनों लोकों में व्याप्त होकर रहते हैं ॥ ९ ॥ वे संसारी जन महामूढ़ हैं, जो विष्णुभक्ति से वर्जित हैं और फिर नारायण भगवान् में निश्चल बुद्धि नहीं रखते ॥ १० ॥

भगवान् मायारहित हैं, निराकार हैं, भक्तों को प्रीति और

वृन्दावनविहाराय गोपालं रूपमुद्वहन् ॥ ११ ॥
मुरलीवादनाऽधारी राधायै प्रीतिमावहन् ।
अंशांशेभ्यः समुन्मील्य पूर्णरूपकलायुतः ॥ १२ ॥
श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान्नन्दगोपवरोद्यतः ।
धरणीरूपिणी मातृयशोदानन्ददायकः ॥ १३ ॥
द्वाभ्यां प्रयाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः ।
ब्रह्मणाऽभ्यर्थितो देवो देवैरपि सुरेश्वरि ॥ १४ ॥
जातोऽवन्यां मुकुन्दो*ऽपि मुरलीवेदरेचकः ।
तया सार्द्धं वचः कृत्वा ततो जातो महीतले ॥ १५ ॥

कामना के देनेवाले हैं । उन्होंने वृन्दावन-विहार के निमित्त गोपाल का रूप धारण किया ॥ ११ ॥ राधा की प्रीति धारण करते हुए मुरली का बजाना ही उनका आधार है । वे अंशों तथा कलाओं से युक्त पूर्णरूप हैं ॥ १२ ॥ वे श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् नन्दगोप के वर को पूर्ण करने के अर्थ पृथ्वीरूपा माता यशोदा को आनन्द देनेवाले हैं ॥१३॥ हे सुरेश्वरि ! उन दोनों (नन्द, यशोदा) और ब्रह्मादि देवों तथा वसुदेव, देवकी के प्रार्थना करने पर ॥१४॥ निर्वाणमोक्ष के देनेवाले भी पृथ्वी में उत्पन्न हुए और मुरलीद्वारा वेद का उपदेश किया । पृथ्वी को वचन दिया था इसलिए पृथ्वी में जन्म धारण किया ॥१५॥

---

* कुमव्ययमान्तं च निर्वाणमोक्षवाचकम् । तद्ददाति च यो देवो मुकुन्दस्तेन कीर्तितः ।

संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम् ।
एतज्ज्योतिरहं वंद्यं चिंतयामि सनातनम् ॥ १६ ॥
गौरतेजो विना यस्तु श्यामतेजः समर्चयेत् ।
जपेद्वा ध्यायते वाऽपि स भवेत्पातकी शिवे ॥ १७ ॥
स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः ।
एतैर्दोषैर्विलिप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि ॥ १८ ॥
तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम् ।
तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम् ॥ १९ ॥

संसार में जो सार वस्तुएँ हैं उनके सर्वस्व, अत्यन्त उज्ज्वल तथा श्यामवर्ण, ऐसी जो स्तुति करने योग्य अनादि राधा-माधवरूप ज्योति है उसी की मैं वन्दना और चिंतना करता हूँ ॥ १६ ॥ हे पार्वती ! गौर तेज (राधा) के विना जो श्याम तेज (कृष्ण) की आराधना, पूजा, जप व ध्यान करते हैं वे पातकी होते हैं ॥ १७ ॥ हे महेश्वरि ! जो गौर तथा श्याम तेज में भेद-बुद्धि रखते हैं वे ब्रह्महा, सुरापी, स्वर्णापहारी, गोघ्न और गुरुतल्पगामी इन पाँच दोषों के भागी होते हैं ॥ १८ ॥ ब्रह्मादि देवों की प्रार्थना से वह ज्योति, उज्ज्वल तथा श्याम, राधा-माधवरूप से दो प्रकार की हुई। हे महादेवि ! यह भक्तों से गुप्त न रहे, इस कारण श्रीगोपालजी ने इस राधा-माधवरूप को बताया ॥ १९ ॥ कार्त्तिक की पूर्णिमा

दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्त्तिक्यां रासमंडले ।
ततः पृष्टवती राधा संदेहं भेदमात्मनः ॥ २० ॥
निरंजनात्समुत्पन्नं मयाऽधीतं जगन्मयि ।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च ॥२१॥
ततो नारदतः सर्वं विरला वैष्णवा जनाः ।
कलौ जानन्ति देवेशि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥२२॥
शठाय कृपणायाऽथ दाम्भिकाय सुरेश्वरि ।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद्यन्तेन गोपयेत् ॥२३॥

को रासमंडल में दुर्वासादिक निराहार मुनियों के मोहसंवाद के उपरान्त श्रीराधाजी ने अपने रूप के भेद को पूछा, उस समय श्रीगोपालजी ने स्वयं बताया ॥ २० ॥ मायारहित ज्योति से उत्पन्न इस रूप की स्तुति को पहिले मैंने जाना, मुझसे संसार ने जाना, फिर कृष्ण भगवान् ने श्रीराधाजी तथा नारदजी से कहा ॥२१॥ (फिर श्रीराधाजी ने मुझसे कहा और मैंने नारदजी को बताया) हे देवेशि ! इस प्रकार श्रीनारदजी के द्वारा कलि-युग में कोई-कोई वैष्णवजन जानते हैं । यह सब यत्नपूर्वक गुप्त रखने योग्य है ॥२२॥ हे सुरेश्वरि ! शठ, कृपण और पाखंडी को न देना चाहिए । इनको देने से ब्रह्महत्या का पातक होता है । इस कारण इसको युक्तिपूर्वक गुप्त रखना ॥ २३ ॥

अथ विनियोगः ।

ॐ अस्य श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य श्रीनारद ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीगोपालो देवता कामो बीजंमाया शक्तिः चन्द्रः कीलकम् श्रीकृष्ण-चन्द्रभक्तिजन्यफलप्राप्तये श्रीगोपालसहस्रनाम-स्तोत्रपाठे विनियोगः ॥ २४ ॥

करन्यासः—ॐ क्लां अङ्गुष्ठाभ्या नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

विनियोग (तंत्रविधि से ऋष्यादिकों का कथन)

श्रीगोपालसहस्रनाममंत्ररूपी स्तोत्र के श्रीनारदजी ऋषि हैं, अनुष्टुप् इसका छन्द है, श्रीगोपाल महाराज इसके देवता हैं, काम इसका बीज है, माया इसकी शक्ति है, चन्द्र इसका कील है, श्रीकृष्णचन्द्र की भक्ति से उत्पन्न फलप्राप्ति की इच्छा से श्रीगोपालसहस्रनाम स्तोत्रपाठ के निमित्त ऋष्या-दिकों का कथन करता हूँ ॥ २४ ॥ इसके पश्चात् करन्यास और अङ्गन्यास करना चाहिए ।

———

अङ्गन्यासः—ॐ क्लां हृदयाय नमः । ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा । ॐ क्लूं शिखायै वषट् । ॐ क्लैं कवचाय हुम् । ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ क्लः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम् ।

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविंदं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥२५॥

अथ ध्यानम् (रूप की चिंतना करना)

विकसित नील कमल के समान कान्तिधारी, चन्द्रमा के समान आनन्दप्रद मुख, मयूरपुच्छ के मुकुट में प्रेम, वक्षःस्थल में श्रीवत्स * का चिह्न, दयावान्, कौस्तुभमणिधारी, पीताम्बरधारी, चित्ताकर्षक, गोपियों के कमलवत् नेत्रों से पूजित शरीर, गौओं तथा गोपों के समूह से घिरे, धर्म के ज्ञाता, वंशी बजाने में तत्पर, दिव्य अङ्ग तथा दिव्यभूषाधारी, ऐसे श्रीगोपाल महाराज का भजन करता हूँ ॥२५॥

---

* श्रीवत्स=चमकते हुए सफेद बालों की भँवरी ।

श्रीगोपालो[1] महीपालः[2] सर्ववेदान्तपारगः[3]।
कृष्णः[4] कमलपत्राक्षः[5] पुण्डरीकः[6] सनातनः[7] ॥२६॥
गोपतिर्भूपतिः[8] शास्ता[9] प्रहर्ता[10] विश्वतोमुखः[11]।
आदिकर्ता[12] महाकर्ता[13] महाकालः[14] प्रतापवान्[15] ॥२७॥
जगज्जीवो[16] जगद्धाता[17] जगद्धर्ता[18] जगद्वसुः[19]।
मत्स्यो[20] भीमः[21] कुहूभर्ता[22] हर्ता[23] वाराहमूर्तिमान्[24] ॥२८॥

१ मंगलरूप गोसमूह के पालनकर्ता २ पृथ्वी के पालनकर्ता ३ सम्पूर्ण वेदान्त के पारंगत ४ दुरित खींचनेवाले ५ कमलपत्रवत् बड़े नेत्रवाले ६ शोभायुक्त ७ सदा विद्यमान रहनेवाले ८ वाणी के पति ९ भुवनपति १० शासनकर्ता ११ प्रहारकर्ता १२ सबके दर्शक १३ ब्रह्मा के उत्पादक १४ पंचतत्त्व के उत्पादक १५ पंचतत्त्व के नाशकर्ता १६ प्रतापी १७ संसार के जीवन १८ संसार के धारणकर्ता १९ संसार के भरणकर्ता २० संसार में यज्ञरूप २१ मत्स्यावतारधारी २२ भयंकर २३ अमावास्या के भरणकर्ता (पितरों के पालक) २४ दुर्गति के हरणकर्ता २५ वाराहरूपधारी।

---

४ कृष्ण=खींचनेवाले। ८ गो=वाणी। १४ महा=पंचतत्त्व। २० वसु=यज्ञ। २३ कुहू=अमावास्या, भर्ता=भरनेवाले।

२६ २७ २८ २९
नारायणो हृषीकेशो गोविन्दो गरुडध्वजः ।
३० ३१ ३२
गोकुलेन्द्रो महाचन्द्रः शर्वरीप्रियकारकः ॥ २९ ॥
३३ ३४ ३५
कमलामुखलोलाक्षः पुण्डरीकः शुभावहः ।
३६ ३७ ३८ ३९
दूर्वाशाः कपिलो भौमः सिंधुसागरसंगमः ॥३०॥
४० ४१ ४२ ४३
गोविन्दो गोपति गोत्रं कालिंदीप्रेमपूरकः ।
४४ ४५ ४६
गोस्वामी गोकुलेन्द्रो गोगोवर्द्धनवरप्रदः ॥ ३१ ॥

२६ जलवासी २७ प्रीतिकारक किरणवाले २८ धर्म के ज्ञाता २९ ध्वजा में गरुडचिह्नधारी ३० गोकुल के इन्द्र ३१ बड़े आह्लादक ३२ रात्रि के प्रियकारक ३३ लक्ष्मी के मुखावलोकन में चंचल नेत्र ३४ दिव्यवेशधारी ३५ कल्याण-कर्ता ३६ धर्मभ्रष्टों के शासक ३७ कपिलदेवरूप ३८ प्रतिमा-रूप से पृथ्वी में होनेवाले ३९ गंगासागरसंगमरूप ४० स्तुति द्वारा प्राप्त होनेवाले ४१ संसार के रक्षक ४२ गोत्ररूप ४३ कालिंदी के प्रेमपूरक ४४ वेद के स्वामी ४५ गोसमूह के इन्द्र ४६ वाणी द्वारा गोवर्द्धन से वर दिलानेवाले ।

---

२६ नार=जल, अयन=घर। २७ हृषी=प्रीति, केश=किरण। २८ गो=धर्म, विन्द=प्राप्त होना । ३४ पुंड=भूषा-वेश। ३९ सिंधु=गंगा । ४० गो=वाणी, विन्द=प्राप्त होना। ४१ गो=पृथ्वी, पति=रक्षक। ४४ गो=वेद।

नन्दादिगोकुलत्राता[४७] दाता[४८] दारिद्र्यभञ्जनः[४९] ।
सर्वमङ्गलदाता[५०] च सर्वकामप्रदायकः[५१] ॥ ३२ ॥
आदिकर्ता[५२] महीभर्ता[५३] सर्वसागरसिंधुजः[५४] ।
गजगामी[५५]गजोद्धारी[५६]कामी[५७]कामकलानिधिः[५८]॥३३॥
कलङ्करहितश्चन्द्रो[५९] बिम्बास्यो[६०] बिम्बसत्तमः[६१] ।
मालाकारः[६२] कृपाकारः[६३] कोकिलस्वरभूषणः[६४]॥३४॥
रामो[६५] नीलाम्बरो[६६] देवो[६७] हली[६८] दुर्दाममर्दनः[६९] ।

४७ नन्दादि तथा गोकुल के रक्षक ४८ दानी ४९ दरिद्र के नाशक ५० सबके मंगलदाता ५१ सबके मनोरथपूरक ५२ अकारादिवर्णों के कर्ता ५३ पृथ्वी के भरणकर्ता ५४ सम्पूर्ण सगरपुत्रों को सिंधु के अर्थ वध करानेवाले ५५ गम्भीर गतिवाले ५६ गज के उद्धारकर्ता ५७ कामनारूप ५८ काम की कलाओं के निधि ५९ निष्कलंक ६० आनन्दी ६१ चित्ररूप ६२ दिव्य चित्रवाले ६३ जापकरूप ६४ कृपा करनेवाले ६५ कोकिलस्वर के भूषण ६६ ध्यान के स्थल ६७ राधारूप के नील अम्बर ६८ देवरूप ६९ चित्र रचना में चतुर ७० खलमर्दक ।

---

५२ आदि=अकारादि स्वर तथा वर्ण। ५४ सर्वान् सगरपुत्रान् सिंध्वर्थं जृणाति हन्ति। ५५ गज=गम्भीर। ६० चन्द्र=आनन्द। ६१ बिम्ब=चित्र, तसवीर, आस्य=मुख। ६९ हल=चित्ररचना। ७० दुर्दाम=खल।

सहस्राक्षपुरीभेत्ता[७१] महामारीविनाशनः[७२] ॥ ३५ ॥
शिवः[७३] शिवतमो[७४] भेत्ता[७५] बलारातिप्रपूजकः[७६] ।
कुमारीवरदायी[७७] च वरेण्यो[७८] मीनकेतनः[७९] ॥ ३६ ॥
नरो[८०] नारायणो[८१] धीरो[८२] राधापतिरुदारधीः[८३] ।
श्रीपतिः[८४] श्रीनिधिः[८५] श्रीमान्[८६] मापतिः[८७] पतिराजहा[८८] ३७
वृन्दापतिः[८९] कुल[९०] ग्रामी[९१] धाम[९२] ब्रह्म[९३] सनातनः[९४] ।
रेवतीरमणो[९५] रामः[९६] प्रियः[९७] चञ्चललोचनः[९८] ॥ ३८ ॥

७१ इन्द्रपुरी के भेदनकर्ता ७२ अकालमृत्यु के नाशक। ७३ कल्याणरूप ७४ अज्ञानियों के बोधक ७५ भेदनकर्ता ७६ इन्द्र के पूज्य ७७ कुमारी के वरदाता ७८ वरदायी ७९ मीन के गुण के ज्ञाता ८० नरतनुधारी ८१ जल में निवास करनेवाले ८२ धैर्यवान् ८३ राधा के पति ८४ उदार-बुद्धि ८५ लक्ष्मी के पति ८६ विद्या के निधि ८७ लक्ष्मीयुक्त ८८ मानरक्षक ८९ चक्रवर्ती ९० वृन्दा गोपी के पति ९१ वंशधारी ९२ ग्रामसमूह के स्वामी ९३ आश्रितों के धाम ९४ ज्ञानवर्द्धक ९५ अनादि ९६ रेवती नक्षत्र में रमणकारी ९७ रमारमण ९८ मनोहर ९९ चंचल नेत्रवान्।

---

७१ सहस्राक्ष=इन्द्र। ७३ शिव=कल्याण। ७६ बलाराति=इन्द्र, ७९ मीन=मछली, केतन=जानना। ८६ श्री=विद्या। ८८ मा=मान। ९४ बृहंति= ज्ञानमिति।

रामायणशरीरोऽयं रामी रामः श्रियः पतिः ।
शर्वरः शर्वरी सर्वः सर्वत्रशुभदायकः ॥ ३९ ॥
राधाराधयिता राधी राधाचित्तप्रमोदकः ।
राधारतिसुखोपेतो राधामोहनतत्परः ॥ ४० ॥
राधावशीकरो राधाहृदयाम्भोजषट्पदः ।
राधालिङ्गनसम्मोहो राधानर्तनकौतुकः ॥ ४१ ॥
राधासञ्जातसंप्रीतो राधाकाम्यफलप्रदः ।
वृन्दापतिः कोकनिधिः कोकशोकविनाशनः ॥४२॥

१०० राम कथारूप । इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे प्रथमः शतकः ॥

१ स्त्रियों के स्वामी २ अग्निरूप ३ बुद्धि के पति ४ तत्त्वज्ञानियों में व्याप्त ५ शिवकथारूप ६ सम्पूर्ण ७ सर्वत्र शुभ के दाता ८ राधा के शृंगारी ९ राधा के स्वामी १० राधा का चित्त प्रसन्न करनेवाले ११ राधा की क्रीड़ा में सुखी १२ राधा को मोहित करने में तत्पर १३ राधा के वश्यकारी १४ राधा के कमलरूपी हृदय के भ्रमर १५ राधा के आलिंगन से आनंदित १६ राधानृत्य के कौतुकी १७ राधा के प्रेमी १८ राधा के मनोरथपूरक १९ वृन्दा गोपी के पति २० कामशास्त्र के निधि २१ भेड़ियों के भय को मिटानेवाले।

२० कोक=कामशास्त्र । २१ कोक=भेड़िया ।

२२ २३ २४
चन्द्रापतिश्चन्द्रपतिश्चण्डकोदण्डभञ्जनः ।
२५ २६ २७ २८
रामो दाशरथी रामो भृगुवंशसमुद्भवः ॥ ४३ ॥
२९ ३० ३१ ३२
आत्मारामो जितक्रोधो मोही मोहान्धभंजनः ।
३३ ३४ ३५ ३६
वृषभानुभवो भावी काश्यपिः करुणानिधिः ॥४४॥
३७ ३८ ३९ ४० ४१
कोलाहलो हली हाली हेली हलधरप्रियः ।
४२ ४३ ४४ ४५
राधामुखाब्जमार्तण्डो भास्करो रविजो विधुः ४५

२२ चन्द्रा सखी के पति २३ चन्द्र नाम सखा के स्वामी २४ महादेव का धनुष तोड़नेवाले २५ राम २६ दशरथ के पुत्र २७ लक्ष्मी के दाता २८ भृगुवंशी २९ आत्मा के रमणकारी ३० क्रोधजित् ३१ मोहरूप ३२ मोहान्ध के नाशक ३३ वृषभानु के कल्याणकारी ३४ होनहार ३५ कश्यप के पुत्र ३६ करुणा के समुद्र ३७ कोलाहलनाशक ३८ हलधारी ३९ दुष्टों के नाशक ४० लेखक चित्रगुप्तरूप ४१ बलभद्र के प्रिय ४२ राधा के कमलरूपी मुख के सूर्य ४३ अभयकारी (प्रकाशक) ४४ सूर्य में किरणरूप ४५ दुराचारनाशक।

---

२४ चंड=रुद्र, कोदंड=धनुष। २७ रा=दान, मा=लक्ष्मी। ३७ कोल=दुष्टों का मेल, हल=नाश। ४० हली=लिखनेवाले।

विधि[४६] र्विधाता[४७] वरुणो[४८] वारुणो[४९] वारुणीप्रियः[५०]।
रोहिणीहृदयानन्दी[५१] वसुदेवात्मजो[५२] बली[५३] ॥ ४६ ॥
नीलाम्बरो[५४] रौहिणेयो[५५] जरासन्धवधोऽमलः[५६]।
नागो[५७] जवाम्भो[५८] विरुदो[५९] विरुहो[६०] वरदो[६१] बली[६२] ॥४७॥
गोपथो[६३] विजयो[६४] विद्वान्[६५] शिपिविष्टः[६६] सनातनः[६७]।
पर्शुरामवचोग्राही[६८] वरग्राही[६९] शृगालहा[७०] ॥ ४८ ॥

४६ यज्ञ में विधिरूप ४७ विविध नामधारी ४८ जल के स्वामी ४९ रत्नरूप ५० वरुणकृत पूजा के प्रिय ५१ रोहिणी के हृदय को आनन्द देनेवाले ५२ वसुदेव के आत्मज ५३ पराक्रमी ५४ नीलकान्तिधारी ५५ रोहिणी नक्षत्र में होनेवाले ५६ जरासंध के वधकर्ता ५७ निर्मल ५८ पंडित ५९ शीघ्र कृपाकारी ६० वंदित ६१ लताओं और वृक्षों के विहारी ६२ वर के दाता ६३ मल्ल ६४ गऊ चरानेवाले ६५ जीतनेवाले ६६ त्रिकालज्ञ ६७ प्रकाशक ६८ सदा विद्यमान ६९ परशुराम के वचन के ग्रहणकर्ता ७० वर ग्रहण करनेवाले ७१ शृगाल नाम राजा के वधकर्ता।

---

४७ वि=विविध। ४९ वारुण=वरुणद्वारा उत्पन्न। ५० वारुणी=वरुणकृता पूजा। ५८ न=नहीं, अग=जड़ता। ५९जव=शीघ्र, अम्भ=राग। ६१ विरुह=चढ़ना। ६७ शिपि=रश्मि, विष्ट=स्थित।

दमघोषोपदेष्टा[७२] च रथग्राही[७३] सुदर्शनः[७४] ।
वीरपत्नीयशस्त्राता[७५] जराव्याधिविघातकः[७६] ॥४९॥
द्वारकावासतत्त्वज्ञो[७७] हुताशनवरप्रदः[७८] ।
यमुनावेगसंहारी[७९] नीलाम्बरधरः[८०] प्रभुः[८१] ॥ ५० ॥
विभुः[८२] शरासनो[८३] धन्वी[८४] गणशो[८५] गणनायकः[८६] ।
लक्ष्मणो[८७] लक्षणो[८८] लक्ष्यो[८९] रक्षोवंशविनाशनः[९०] ५१
वामनो[९१] वामनीभूतोऽवामनो[९२] वामनारुहः[९३] ।
यशोदानन्दनः[९४] कर्ता[९५] यमलार्जुनमुक्तिदः[९६] ॥५२॥

७२ दमघोष के उपदेष्टा ७३ अर्जुन के सारथी ७४ दर्शनीय ७५ बलपूर्वक पत्नियों के यश के रक्षक ७६ जरा व्याधि के नाशक ७७ द्वारकावास के तत्त्वज्ञ ७८ अग्नि के वरदायी ७९ यमुनावेगनाशक ८० नीलाम्बर धारणकर्ता ८१ स्वामी। ८२ संसार में शोभायुक्त ८३ धनुषरूप ८४ धनुर्धर ८५ सेना के ईश ८६ सेना के संचालक ८७ शेषावतार ८८ शुभ लक्षणयुक्त ८९ वेधन के चिह्न ९० राक्षसों के वंशनाशक ९१ वामनरूप ९२ छोटे हो जानेवाले ९३ बृहत्काय ९४ नवनीतार्थ वामन गोपाल के कंधे पर चढ़नेवाले ९५ यशोदा के आनन्ददाता ९६ सब के कर्ता ९७ यमलार्जुन के मुक्तिदाता ।

---

८९ लक्ष्य-निशाना। ९४ वामन-गोप का नाम, रुह-चढ़ना।

उलूखली[९८] महामानी[९९] दामबद्धाह्वयो[१००] शमी[१]।
भक्तानुकारी[२] भगवान्[३] केशवो[४] बलधारकः[५] ॥५३॥
केशिहा[६] मधुहा[७] मोही[८] वृषासुरविघातकः[९]।
अघासुरविनाशी[१०] च पूतनामोक्षदायकः[११] ॥५४॥
कुब्जाविनोदी[१२] भगवान्[१३] कंसमृत्युर्महामखी[१४]।
अश्वमेधो[१६] वाजपेयो[१७] गोमेधो[१८] नरमेधवान्[१९] ॥५५॥

९८ ओखली में बँधनेवाले ९९ बड़े सम्मानवाले १०० दामबद्धनामधारी।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे द्वितीयः शतकः।

१ शान्तिरूप २ भक्तों का अनुकरण करनेवाले ३ षट् ऐश्वर्यवाले वा महावाक्य ४ केशबंधनकर्ता ५ बलधारणकर्ता ६ केशी दैत्य के नाशक ७ मधु दैत्यनाशक ८ मोहनयुक्त ९ वृषासुरनाशक १० अघासुर के वधकर्ता ११ पूतना के मोक्षदाता १२ कुब्जा के विनोदी १३ सुन्दर भाग्यवान् १४ कंस की मृत्यु १५ बड़े यज्ञकर्ता १६ अश्वमेधकर्ता १७ वाजपेयकर्ता १८ गोमेधकर्ता १९ नरमेधकर्ता।

---

१०० दाम-रस्सी, बद्ध-बँधना। १ शम-शान्ति। १६, १७, १८, १९ यज्ञ के नाम।

कंदर्पकोटिलावण्यश्चन्द्रकोटिसुशीतलः ।
रविकोटिप्रतीकाशो वायुकोटिमहाबलः ॥ ५६ ॥
ब्रह्मा ब्रह्माण्डकर्ता च कमलावाञ्छितप्रदः ।
कमली कमलाक्षश्च कमलामुखलोलुपः ॥ ५७ ॥
कमलाव्रतधारी च कमलाक्षः पुरंदरः ।
सौभाग्याधिकचित्तोऽयं महामायी महोत्कटः ५८
तारकारिः सुरत्राता मारीचक्षोभकारकः ।
विश्वामित्रप्रियो दान्तो रामो राजीवलोचनः ५९

२० कोटि काम के समान सुन्दर २१ कोटि चन्द्रमा के समान सुन्दर और शीतल २२ कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान २३ कोटि वायु के समान महाबली २४ सृष्टि के कर्ता २५ ब्रह्माण्डों के कर्ता २६ लक्ष्मी के मनोरथपूरक २७ कमलधारी २८ लक्ष्मी के आधार २९ कमलामुख के लोलुप ३० कमला के प्रेमी ३१ शोभायुक्त नेत्रवाले ३२ शत्रुओं के विदीर्णकर्ता ३३ अधिक सौभाग्ययुक्त चित्तवाले ३४ अचिंत्य मायायुक्त ३५ बड़े कठिन ३६ तारकासुर के शत्रु ३७ देवताओं के रक्षक ३८ मारीच को भय देनेवाले ३९ विश्वामित्र के प्रिय ४० पाखंडियों के नाशक ४१ पृथ्वी के पालनकर्ता ४२ कमलनयन ।

२८ कमला-लक्ष्मी, अक्ष-धुरा । ४२ राजीव-कमल ।

लंकाधिपकुलध्वंसी[४३] विभीषणवरप्रदः[४४] ।
सीतानन्दकरो[४५] रामो वीरो[४६] वारिधिबंधनः[४७] ॥६०॥
खरदूषणसंहारी[४८] साकेतपुरवासवान्[४९] ।
चन्द्रावलीपतिः[५०] कूलः[५१] केशिकंसवधोऽमलः[५२] ॥६१॥
माधवो[५३] मधुहा[५४] माध्वी[५५] माध्वीको[५६] माधवीविभुः[५७] ।
मुंजाटवीगाहमानो[५८] धेनुकारिर्धरात्मजः[६०] ॥ ६२ ॥
वंशीवटविहारी[६१] च गोवर्द्धनवनाश्रयः[६२] ।
तथा तालवनोद्देशी[६३] भांडीरवनशङ्कहा[६४] ॥ ६३ ॥

४३ रावणकुल के नाशक ४४ विभीषण के वरदाता ४५ सीता के आनन्ददाता राम ४६ पराक्रमी ४७ समुद्र के बंधनकर्ता ४८ खरदूषण के नाशकर्ता ४९ गोलोकवासी ५० चन्द्रावली सखी वा शोभा के पति ५१ आच्छादनकर्ता ५२ केशी तथा कंस के नाशक ५३ पापरहित ५४ यदुवंशी ५५ मधु दैत्यनाशक ५६ मधुरतायुक्त ५७ मधुरता के रक्षक ५८ माधवी गोपी के स्वामी ५९ मूँजा के वन में विचरनेवाले ६० धेनुकासुर के शत्रु ६१ यशोदा के आत्मज ६२ वंशीवटविहारी ६३ गोवर्धन वन में विश्रामकारी ६४ तालवन के संकेती ६५ भांडीर वन की शंका के नाशक ।

---

४९ साकेतपुर=गोलोक । ५१ कूल=तट । ५४ मधु=यदुवंश ।
५९ मुंज=मूँजा, अटवी=वन, गाहमान=ढूँढ़ना ।

तृणावर्तकृपाकारी[६६] वृषभानुसुतापतिः[६७] ।
राधाप्राणसमो[६८] राधावदनाब्जमधुव्रतः[६९] ॥ ६४ ॥
गोपीरंजनदैवज्ञो[७०] लीलाकमलपूजितः[७१] ।
क्रीडाकमलसन्दोहो[७२] गोपिकाप्रीतिरंजनः[७३] ॥६५॥
रंजको[७४] रंजनो[७५] रङ्गो[७६] रङ्गी[७७] रङ्गमहीरुहः[७८] ।
कामः[७९] कामारिभक्तोऽयं[८०] पुराणपुरुषः[८१] कविः[८२] ॥६६॥
नारदो[८३] देवलो[८४] भीमो[८५] बालो[८६] बालमुखाम्बुजः[८७] ।
अम्बुजो[८८] ब्रह्म[८९] साक्षी[९०] च योगीदत्तवरो[९१] मुनिः[९२] ६७

६६ तृणसमूह में विश्राम करनेवाले ६७ वृषभानु की सुता के पति ६८ राधा के प्राणसमान ६९ राधा के कमलरूपी वदन के भ्रमर ७० गोपियों के शृंगार के ज्योतिषी ७१ कमल-पुष्पों से राधा के पूजक ७२ क्रीड़ा के अर्थ कमल संचय करनेवाले ७३ गोपियों की प्रीति के रंजनकर्ता, ७४ भूषित करनेवाले ७५ आनन्ददाता ७६ आनन्दरूप ७७ अनुरागी ७८ रङ्गभूमि में पधारनेवाले ७९ चित्त में व्याप्त ८० शंकर के प्रेमी ८१ पूर्वपुरुष ८२ काव्यकर्ता ८३ धर्म के दाता ८४ देवताओं के अनुरागी ८५ बृहत्काय ८६ शिशु ८७ बालक के समान कमलरूपी मुखवाले ८८ जल के जेता (मत्स्यावतारी) ८९ धर्मवर्द्धक ९० सर्वदर्शी ९१ योगियों के वरदाता ९२ ज्ञानी (मननकर्ता) ।

---

६६ तृण-खर, आवर्त-समूह । ७१ लीला-राधा ।

ऋषभः पर्वतो ग्रामो नदीपवनवल्लभः ।
पद्मनाभः सुरज्येष्ठो ब्रह्मा रुद्रोऽहिभूषितः ॥६८॥
गणानां त्राणकर्ता च गणेशो गृहिलो ग्रही ।
गणाश्रयो गणक्रोधी क्रोडीकृतजगत्त्रयः ॥ ६९ ॥
यादवेन्द्रो द्वारकेन्द्रो मथुरावल्लभो धुरी ।
भ्रमरः कुन्तली कुन्तीसुतरक्षी महामखी ॥७०॥
यमुनावरदाता च कश्यपस्य वरप्रदः ।
शंखचूडवधो दामी गोपीरक्षणतत्परः ॥ ७१ ॥

९३ सर्वश्रेष्ठ ९४ अचल ९५ रागरूप ९६ जलवायु के स्वामी ९७ कमलनाभ ९८ देवताओं से बड़े ९९ सृष्टिकर्ता १०० घोररूप ।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे तृतीयः शतकः ॥

१ सर्प से भूषित २ गणों के रक्षक ३ गणों के ईश ४ प्रासादवाले ५ ग्रहों के स्वामी ६ गणों के आश्रयदाता ७ गणों पर क्रोध करनेवाले ८ जगत्त्रय के स्वामी ९ यदुवंशियों के इन्द्र १० द्वारका के इन्द्र ११ मथुरा के वल्लभ १२ धारणकर्ता १३ विचरनेवाले १४ कुन्त नाम वाद्यधारी १५ कुंतीसुतरक्षक १६ पंच यज्ञादिकों के कर्ता १७ यमुना के वरदाता १८ कश्यप के वरप्रद १९ शंखचूड़ के नाशक २० पाशधारी २१ गोपियों की रक्षा में तत्पर ।

---

२० दाम-रस्सी ।

२२ २३ २४ २५ २६
पाञ्चजन्यकरो रामी त्रिरामी वनजो जयः ।
२७ २८ २९
फाल्गुनः फाल्गुनसखो विराधवधकारकः ॥७२॥
३० ३१
रुक्मिणीप्राणनाथश्च सत्यभामाप्रियंकरः ।
३२ ३३ ३४ ३५
कल्पवृक्षो महावृक्षो दानवृक्षो महाफलः ॥ ७३ ॥
३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१
अंकुशो भूसुरो भावो भामको भ्रामको हरिः ।
४२ ४३ ४४ ४५ ४६
शरलः शाश्वतो वीरो यदुवंशी शिवात्मकः ७४

२२ पांचजन्य शंखधारी २३ स्त्रियोंके स्वामी २४ महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती के निवासस्थान २५ जल के वेग को जीतनेवाले २६ जयरूप २७ नर (अर्जुन) रूप २८ अर्जुन के सखा २९ विराध के नाशक ३० रुक्मिणी के प्राणनाथ ३१ सत्यभामा के प्रियकारक ३२ मनोरथपूरक ३३ सुरतरु ३४ दान के वृक्ष ३५ मोक्षरूप ३६ संसार के अंकुश ३७ पृथ्वी के देवता ३८ प्रभारक्षक ३९ सत्यभामा के सुखद ४० संसार को भ्रमानेवाले ४१ हरणकर्ता ४२ विद्युत् ४३ शीघ्री ४४ कंपनकारी ४५ यदुवंशी ४६ कल्याणरूपी आत्मावाले ।

---

२२ पांचजन्य=शंख का नाम। २७ फाल्गुन=अर्जुन। ३५ महाफल=मोक्ष। ३८ भा=दीप्ति, अव=रक्षा। ३९ भाम=सत्यभामा। ४२ शर=जल, उत्तेजना, बाण, मलाई, शर (मेदिनीकोश)

प्रद्युम्नो बलकर्ता च प्रहर्ता दैत्यहा प्रभुः ।
महाधनो महावीरो वनमालाविभूषणः ॥ ७५ ॥
तुलसीदामशोभाढ्यो जलन्धरविनाशनः ।
सूरः सूर्य्यो मृतंडश्च भास्करो विश्वपूजितः ७६
रविस्तमोहा वह्निश्च वाडवो वडवानलः ।
दैत्यदर्पविनाशी च गरुडो गरुडाग्रजः ॥ ७७ ॥
गोपीनाथो महानाथो वृन्दानाथो विरोधकः ।
प्रपञ्ची पञ्चरूपश्च लतागुल्मश्च गोपतिः ॥ ७८ ॥

४७ काम के अवतार ४८ बल के उत्पादक ४९ गर्वहारी ५० दैत्यों के नाशक ५१ सबके स्वामी ५२ महात्माओं के धन ५३ बड़े वीर ५४ वनमालाधारी ५५ तुलसी की माला से शोभित ५६ मेघ वा जलंधर दैत्य के नाशक ५७ दिव्य अग्नि ५८ सूर्य ५९ पृथ्वी में नृत्यकारी ६० प्रकाशयुक्त ६१ संसार से पूजित ६२ सूर्य ६३ अन्धकारनाशक ६४ अग्नि ६५ जलबंधनकर्ता ६६ जल की अग्नि ६७ दैत्यदर्पनाशक ६८ शीघ्र गतिवाले ६९ गरुड़ से भी शीघ्रगामी ७० गोपियों के नाथ ७१ पंचतत्त्व के नाथ ७२ वृन्दा के नाथ ७३ विरोधक ७४ प्रपंची ७५ पंचरूप ७६ लता के गुल्म (बाँदा) ७७ श्रुतियों के पति ।

---

७७ गो-वेद, पति-स्वामी ।

गंगा च यमुनारूपो गोदा वेत्रवती तथा ।
कावेरी नर्मदा तापी गण्डकी सरयू रजः ॥७९॥
राजसस्तामसस्सावी सर्वाङ्गी सर्वलोचनः ।
मुदामयोऽमृतमयो योगिनीवल्लभः शिवः ॥८०॥
बुद्धो बुद्धिमतां श्रेष्ठो विष्णुर्जिष्णुः शचीपतिः ।
वंशी वंशधरो लोकविलोको मोहनाशनः ॥८१॥
रवरावो रवो रावा बाला बालबलाहकः ।

७८ गंगारूप ७९ यमुनारूप ८० गोदावरीरूप ८१ बेतवा-रूप ८२ कावेरीरूप ८३ नर्मदारूप ८४ तापीरूप ८५ गंडकी-रूप ८६ सरयूरूप ८७ तथा इनके रजरूप ८८ राजसगुणी ८९ तामसगुणी ९० सत्त्वगुणी ९१ विश्व के अंग ९२ सर्व-दर्शक ९३ आनन्दमय ९४ अमृतमय ९५ योगिनियों के वल्लभ ९६ कल्याणरूप ९७ जानने योग्य ९८ ज्ञानियों में श्रेष्ठ ९९ प्रवेश का स्थान १०० जयशील ।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे चतुर्थः शतकः ।

१ इन्द्राणी के पति २ वंशवान् ३ वंशधारणकर्ता ४ लोकों में विशिष्ट लोक ५ मोह के नाशक ६ ऊँचे शब्दवाले ७ शब्दरूप ८ शब्दरक्षक ९ बालरूप १० नवीन अग्नि ।

---

६ रव-शब्द, राव-वेग । १० बलाहक-अग्नि ।

११ १२ १३ १४ १५ १६
शिवो रुद्रोनलोनीलो लाङ्गलीलाङ्गलाश्रयः८२
१७ १८ १९ २० २१
पारदः पावनो हंसो हंसारूढो जगत्पतिः ।
२२ २३ २४
मोहनीमोहनो मायामहामायी महासुखी ॥८३॥
२५ २६ २७ २८
वृषो वृषाकपिः कालः कालीदमनकारकः ।
२९ ३० ३१
कुब्जाभाग्यप्रदो वीरो रजकक्षयकारकः ॥८४॥
३२ ३३ ३४ ३५ ३६
कोमलो वारुणो राजा जलजो जलधारकः ।
३७ ३८ ३९ ४०
हारकः सर्वपापघ्नः परमेष्ठी पितामहः ॥ ८५ ॥

११ कल्याण के दाता १२ घोररूप १३ महिम्न १४ नीलमणि के समान १५ हलधर १६ लाङ्गल के आश्रयी १७ मोक्ष के दाता १८ पवित्र १९ हंसावतार २० हंस के सवार २१ संसार के पति २२ माया के मोहनकर्ता २३ माया के मर्दनकर्ता २४ अत्यन्त सुखी २५ धर्मरूप २६ धर्म के कंपनकर्ता २७ कालरूप २८ काली के दमनकर्ता २९ कुब्जा के भाग्यवर्द्धक ३० कंपनरहित ३१ रजक के नाशक ३२ मृदु ३३ रत्नों के स्वामी ३४ शोभित ३५ जल के जेता ३६ जलधारणकर्ता ३७ हरणकर्ता ३८ सम्पूर्ण पापों के नाशक ३९ आकाश में व्याप्त ४० पितरों के उत्पादक ।

---

१५ लाङ्गल-हल । १७ पार-दूसरा तट । २६ वृष-धर्म, कपि-कंपनकारी ।

खड्गधारी[४१] कृपाकारी[४२] राधारमणसुन्दरः[४३] ।
द्वादशारण्यसम्भोगी[४४] शेषनागफणालयः[४५] ॥८६॥
कामः[४६] श्यामः[४७] सुखश्रीदः[४८] प्रीहः[४९] प्रीदः[५०] पतिः[५१] कृती[५२] ।
हरि[५३] र्हरो[५४] नरो[५५] नारो[५६] नरोत्तम[५७] इषुप्रियः[५८] ८७
गोपालीचित्तहर्ता[५९] च कर्ता[६०] संसारतारकः[६१] ।
आदिदेवो[६२] महादेवो[६३] गौरीगुरुरनाश्रयः[६४] ॥८८॥
साधुर्मधुर्विधुर्धाता[६५] त्राताऽक्रूरपरायणः[६६] ।
रोलम्बी[६७] च हयग्रीवो[६८] वानरारिर्वनाश्रयः[६९] ॥८९॥

४१ खड्गधारणकर्ता ४२ कृपा करनेवाले ४३ राधारमण सुन्दर ४४ बारह वनों के विहारी ४५ शेषशायी ४६ काम के नियमकर्ता ४७ श्याम ४८ सुखरूप लक्ष्मी के दाता ४९ प्रीतियुक्त ५० प्रीति के दाता ५१ रक्षक ५२ सब कुछ करनेवाले ५३ हरि ५४ पापहारी ५५ नररूप ५६ नरोत्पादक ५७ नरों में उत्तम ५८ ज्ञानप्रिय ५९ गोपियों के चित्तहर्ता ६० कर्ता ६१ संसार के तारक ६२ आदिदेव ६३ बड़े देव ६४ कुमारियों के गुरु ६५ आश्रयरहित ६६ साधक ६७ लक्ष्मी के परिहासक ६८ अमृत के स्थान ६९ धारण-कर्ता ७० रक्षक ७१ अक्रूर के रक्षक ७२ माला में भ्रमरों की गुंजार ७३ हयग्रीव ७४ द्विविद के शत्रु ७५ वन के आश्रयी ।

वनं[७६] वनी[७७] वनाध्यक्षो[७८] महाबन्धो[७९] महामुनिः[८०] ।
स्यमन्तकमणिप्राज्ञो[८१] विज्ञो[८२] विघ्नविघातकः[८३] ॥८०॥
गोवर्द्धनो[८४] वर्द्धनीयो[८५] वर्द्धनी[८६]वर्द्धनः[८७] प्रियः ।
वर्द्धन्यो[८८] वर्द्धनो[८९] वर्द्धी[९०] वर्द्धिष्णुः[९१] सुमुखः[९२] प्रियः[९३] ९१
वर्द्धितो[९४] वृद्धको[९५] वृद्धो[९६] वृन्दारकजनप्रियः[९७] ।
गोपालरमणीभर्ता[९८] साम्बकुष्ठविनाशनः[९९] ॥ ९२ ॥
रुक्मिणीहरणप्रेमी[१००] प्रेमी[१] चन्द्रावलीपतिः[२] ।

७६ गहन ७७ वन के स्वामी ७८ वन के नायक ७९ महाबंध ८० बड़े मननकर्ता ८१ स्यमंतक मणि के ज्ञाता ८२ कुशाग्रबुद्धि ८३ विघ्ननाशक ८४ गोवर्द्धनरूप ८५ बढ़ानेवाले ८६ संपदा के वर्द्धक ८७ प्रिय ८८ बढ़ाने में समर्थ ८९ बढ़नेवाले ९० बढ़े हुए ९१ रूप के वर्द्धक ९२ सुन्दरमुख ९३ पिता के प्रिय ९४ भक्तों के वर्द्धक ९५ ज्ञानवृद्धों के सुखद ९६ ज्ञानवृद्ध ९७ देवताओं के प्रिय ९८ गोपालरमणियों के रक्षक ९९ साम्बकुष्ठ के नाशक १०० रुक्मिणीहरण के प्रेमी ।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे पंचमः शतकः ॥

१ प्रेमयुक्त २ चन्द्रावली सखी के पति ।

---

८६ वर्द्धनी–बढ़नेवाली, वर्द्धन–बढ़ानेवाले ।

श्रीकर्ता[३] विश्वभर्ता[४] च नारायणनरो[५] बली[६] ॥८३॥
गणो[७] गणपतिश्चैव[८] दत्तात्रेयो[९] महामुनिः[१०] ।
व्यासो[११] नारायणो[१२] दिव्यो[१३] भव्यो[१४] भावुकधारकः[१५] ८४
स्वः[१६] श्रेयसं[१७] शिवं[१८] भद्रं[१९] भावुकं[२०] भविकं[२१] शुभम्[२२] ।
शुभात्मकः[२३] शुभः[२४] शास्ता[२५] प्रशस्तो[२६] मेघनादहा[२७] ८५
ब्रह्मण्यदेवो[२८] दीनानामुद्धारकरणक्षमः[२९] ।
कृष्णः[३०] कमलपत्राक्षः[३१] कृष्णः[३२] कमललोचनः[३३] ॥ ८६ ॥

३ लक्ष्मी के उत्पादक ४ संसार के पोषक ५ नरनारायण (अर्जुन-कृष्ण) ६ सामर्थी ७ गणनारूप ८ गणना के पति (बिन्दुरूप) ९ दत्तात्रेयरूप १० बड़े मननकर्ता ११ गरुड़ासन वा व्यासरूप १२ जल के स्थान १३ विशिष्ट १४ दर्शनीय १५ भावना करनेवालों के धारक १६ आश्रयरहित १७ भलाई के रूप १८ कल्याणरूप १९ मंगलरूप २० भावनाकारक २१ सत्तारूप वा होनहार २२ दिव्य २३ मंगल के मंगलदाता २४ शोभायुक्त २५ शासनकर्ता २६ प्रशंसनीय २७ मेघ शब्द के नाशक २८ यज्ञ के देव २९ दीनजनों के उद्धार करने में समर्थ ३० सुन्दरता के कर्षक ३१ बड़े नेत्रवाले ३२ धर्मकर्षक ३३ कमल के प्रकाशक ।

---

७ गण=गणना । १२ नार=जल, अयन=घर । २८ ब्रह्मण्य=यज्ञ । ३३ लोचन= प्रकाश ।

३४ ३५ ३६ ३७
कृष्णः कामी सदाकृष्णः समस्तप्रियकारकः ।
३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३
नन्दो नन्दी महानादो भादो मादनकः किलो ९७
४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०
हिलो मिली गिली गोली गोलो गोलालयो गुली ।
५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६
गुग्गुली मारकी शाखी वटः पिप्पलकः कृती ९८
५७ ५८ ५९
म्लेच्छहा कालहर्ता च यशोदायश एव च ।
६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५
अच्युतः केशवो विष्णुर्हरि । सत्यो जनार्दनः ९९

३४ ओखली के कर्षक ३५ कामनायुक्त ३६ सदा एक समान ३७ सबके मनोरथपूरक ३८ आनन्दरूप ३९ नन्द के वंशज ४० वेदरूप नादवाले ४१ मदरूप ४२ उन्मादक ४३ खेलक्कड़ ४४ बालकों के प्रेमी ४५ बालकों में मिलनेवाले ४६ भक्षक ४७ गोलक खेल खेलनेवाले ४८ देववाणी के दाता ४९ गोलोकवासी ५० उद्यमी ५१ व्याधि से रक्षा करनेवाले ५२काम के काल५३वेद के विभागकर्ता ५४ वेष्टित करनेवाले ५५ जल में सुखी ५६ कृतयुगरूप वा सब कुछ करनेवाले ५७ म्लेच्छनाशक ५८ दुर्भिक्षनाशक ५९ यशोदा के भाग्यरूप ६० धर्म से विचलित न होनेवाले वा नाशरहित ६१ दिव्य केशधारी ६२ सबके स्थान ६३ हरणकर्ता ६४ मिथ्यारहित ६५ याचक ।

---

४० महानाद=वेद । ४८ गो=वेदवाणी, ल=दाता । ४९ गोल=गोलोक, आलय=स्थान । ५० गुल=उद्यम । ५१ गुज्=व्याधि, गुल=रक्षा । ५५ पिप्पल=जल ।

हंसो[६६] नारायणो[६७] लीनो[६८] नीलो[६९] भक्तिपरायणः[७०] ।
जानकीवल्लभो[७१] रामो[७२] विरामो[७३] विषनाशनः[७४] ॥१००॥
सहभानुर्महाभानुः[७५] वीरभानुर्महोदधिः[७६] ।
समुद्रोऽब्धि[७७] रकूपारः[७८] पारावारः[७९] सरित्पतिः[८०] ॥१०१॥
गोकुलानन्दकारी[८१] च प्रतिज्ञापरिपालकः[८२] ।
सदारामः[८३] कृपारामो[८४] महारामो[८५] धनुर्धरः[८६] ॥१०२॥
पर्वतः[८७] पर्वताकारो[८८] गयोगायो[८९] द्विज प्रियः[९०] ।

६६ योग द्वारा मिलनेवाले वा नीर-क्षीरविवेकी ६७ जल के स्थान ६८ लीला के पति वा तन्मय ६९ निरन्तर दर्शक ७० भक्ति में तत्पर ७१ जानकीवल्लभ ७२ राक्षसहंता ७३ ठहरने का स्थान ७४ विषनाशक ७५ सूर्यसम ७६ बड़े सूर्य ७७ वीरों के सूर्य ७८ उत्सव के समुद्र ७९ समुद्र ८० जलधारणकर्ता ८१ भवगर्त के तारक ८२ दोनों तट (संसार तथा मोक्ष) वा उस पार पहुँचानेवाले ८३ नदियों के पति ८४ गोकुल को आनन्दित करनेवाले ८५ प्रतिज्ञा के पालक ८६ सदा सुखरूप ८७ कृपा की फुलवाड़ी ८८ बड़े सुखी ८९ धनुषधारी ९० अचल ९१ बड़े आकारवाले ९२ श्रीगयाजी में पूज्य ९३ ब्राह्मणों के प्रेमी ।

---

६६ हंस-मिलना । ८१ कूप-भवगर्त । ९२ गाय-पूजित ।

कमलाश्वतरो[९४] रामो[९५] रामायणप्रवर्तकः[९६] ॥ १०३ ॥
द्यौ[९७] र्दिवो[९८] दिवसो[९९] दिव्यो[१००] भव्यो[१] भाविभयापहः[२] ।
पार्वतीभाग्यसहितो[३] भर्ता[४] लक्ष्मीविलासवान्[५] १०४
विलासी[६] साहसी[७] सर्वी[८] गर्वी[९] गर्वितलोचनः[१०] ।
मुरारिः[११] सर्वधर्मज्ञो[१२] जीवनो[१३] जीवनान्तकः[१४] ॥ १०५ ॥
यमो[१५] यमारिर्[१६] यमनो[१७] यामी[१८] यामविधायकः[१९] ।

९४ दिव्य अश्ववाले ९५ दाता ९६ रामकथाप्रवर्तक (वाल्मीकि) ९७ प्रकाशमान ९८ अन्धकारनाशक ९९ दिवस-रूप १०० दिव्य गुणवाले ।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे षष्ठः शतकः ॥

१ विशिष्ट २ भावी भय के नाशक ३ हरिहरात्मकरूप ४ सर्वपालक ५ लक्ष्मी के विलासी ६ विलासकारी ७ कठिन कार्य के कर्ता ८ देवमित्रादिकों की मूर्ति ९ मानी १० गर्वीले नेत्रधारी ११ मुर दैत्य के शत्रु १२ सब धर्मों के ज्ञाता १३ संसार के जीवन १४ यमराज १५ काल १६ काल के शत्रु १७ काल से स्तुत १८ प्रहर के स्वामी १९ प्रहर के विधानकर्ता ।

---

९७ द्यौ-प्रकाश । ९८ दिव-क्रीड़ा । ३ पार्वतीभाग्य-शिव । १५ यम-काल, ब्रह्मचर्य, दया, शान्ति, दान, सत्य, कुलीनता, अहिंसा, अस्तेय, मधुरभाषण, इन्द्रियों का निग्रह ये यम हैं। परन्तु यहाँ यम से काल का प्रयोजन है । १८ याम-प्रहर ।

वंशुली[२०] पांशुली[२१] पांशुः[२२] पांडुरर्जुनवल्लभः[२३][२४] ॥१०६॥
ललिताचन्द्रिकामाली[२५] माली[२६] मालाम्बुजाश्रयः[२७] ।
अम्बुजाक्षो[२८] महायक्षोदक्षश्चिन्तामणिःप्रभुः[२९][३०][३१][३२] १०७
मणिर्दिनमणिश्चैव[३३] केदारो[३४] बदरीश्रयः[३५] ।
बदरीवनसंप्रीतो[३६] व्यासः[३७] सत्यवतीसुतः[३८][३९] ॥ १०८॥
अमरारिनिहन्ता[४०] च सुधासिंधुर्विधूदयः[४१][४२] ।
चन्द्रो[४३] रविः[४४] शिवः[४५] शूली[४६] चक्री[४७] चैव गदाधरः[४८]१०९

२० कलावान् २१ पापनाशक, कलाओं से युक्त २२ संयमी २३ सर्वज्ञ २४ अर्जुन के स्वामी २५ ललित चंद्रिकाओं से युक्त मालाधारी २६ मालाधारी वा लक्ष्मी के निवासस्थान २७ कमलमालाधारी २८ मछली के समान चंचल नेत्रवाले २९ महायक्ष ३० कुशल ३१ कल्पवृक्ष ३२ प्रभायुक्त ३३ रत्नरूप ३४ सूर्यरूप ३५ जल में विदारण करनेवाले ३६ बेर के आस्वादक ३७ बदरीवन के पूर्ण प्रेमी ३८ व्याख्याता ३९ सत्यवती के सुत ४० देवशत्रुनाशक ४१ अमृत के समुद्र ४२ पूर्णचन्द्र के समान उदय ४३ चन्द्ररूप ४४ रविरूप ४५ शिवरूप ४६ शूलधारी ४७ चक्रधारी ४८ गदाधारी ।

---

२० वंशुली-कला । २१ पांशु-पापनाशक शक्ति । २२ पांशु-संयम । २३ पांडु-बुद्धि । ३५ क-जल ।

श्रीकर्ता[४९] श्रीपतिः[५०] श्रीदः[५१] श्रीदेवो[५२] देवकीसुतः[५३]।
श्री पतिः[५४] पुण्डरीकाक्षः[५५] पद्मनाभो[५६] जगत्पतिः[५७]११०
वासुदेवोऽप्रमेयात्मा[५८] केशवो[५९] गरुडध्वजः[६०]।
नारायणः[६१] परंधाम[६२] देवदेवो[६३] महेश्वरः[६४]॥ १११ ॥
चक्रपाणिः[६५] कलापूर्णो[६६] वेदवेद्यो[६७] दयानिधिः[६८]।
भगवान्[६९] सर्वभूतेशो[७०] गोपालः[७१] सर्वपालकः[७२]॥११२॥
अनन्तो[७३] निर्गुणो[७४] नित्यो[७५] निर्विकल्पो[७६] निरञ्जनः[७७]।

४९ श्री के कर्ता ५० श्री के पति ५१ श्री के दाता ५२ श्री के देव ५३ देवकी के सुत ५४ बुद्धि के पति ५५ हृत्पद्म के धारक ५६ कमलनाभ ५७ संसार के स्वामी ५८ हृदय के प्रकाशक ५९ उपमारहित ६० केशव ६१ गरुडध्वज ६२ देर में सुननेवाले ६३ दिव्यधाम ६४ देवताओं के देवता ६५ बड़े प्रभाववाले ६६ चक्रधारी ६७ षोडश कलाओं से पूर्ण ६८ वेद द्वारा जानने योग्य ६९ दया के समुद्र ७० ऐश्वर्यवान् ७१ सबके स्वामी ७२ गोपालक ७३ सबके पालनकर्ता ७४ अन्तरहित ७५ सत्त्व-रज-तम-गुणरहित ७६ सदा विद्यमान ७७ विकल्परहित ७८ मायारहित।

---

५५ पुंडरीक=हृत्पद्म। ५८ वासु=हृदय, देव=प्रकाश।

निराधारो[७९] निराकारो[८०] निराभासो[८१] निराश्रयः[८२]॥११३॥
पुरुषः[८३] प्रणवातीतो[८४] मुकुन्दः[८५] परमेश्वरः[८६]।
क्षणावनिःसार्वभौमो[८७] वैकुण्ठो[८८] भक्तवत्सलः[८९]॥११४॥
विष्णुर्दामोदरः[९१] कृष्णो[९२] माधवो[९३] मथुरापतिः[९४]।
देवकीगर्भसम्भूतोयशोदावत्सलो[९६] हरिः[९७] ॥११५॥
शिवः[९८] सङ्कर्षणः[९९] शम्भुर्भूतनाथो[१००] दिवस्पतिः[१]।
अव्ययः[२] सर्वधर्मज्ञो[३] निर्मलो[४] निरुपद्रवः[५] ॥११६॥

७९ आधाररहित ८० आकाररहित ८१ पर प्रकाश-रहित ८२ आश्रयरहित ८३ पुरुष ८४ ओंकार से परे ६५ मुक्ति के दाता ८६ माया के स्वामी ८७ समय के रक्षक ८८ चक्र-वर्ती ८९ नाशरहित ९० भक्तों के प्रेमी ९१ विष्णु ९२ दामोदर ९३ कृष्ण ९४ माधव ९५ मथुरा के पति ९६ देवकी के गर्भज ९७ यशोदा के कृपालु ९८ ज्ञान के दाता ९९ कल्याणरूप १०० सम्यक् कर्षणकारी।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे सप्तमः शतकः।

१ सुख के निमित्त २ प्राणियों के नाथ ३ स्वर्ग के पति ४ नाशरहित ५ सब धर्मों के ज्ञाता ६ पवित्र ७ उपद्रवरहित (शान्त)।

---

८१ निर=निर्गत, आभास=प्रकाश। ८४ प्रणव=ओंकार। ८६ वि=विगत, कुंठ=नाश। ९१। ९२। ९३। ९४ इन नामों के अर्थ पहिले लिखे जा चुके हैं। ३ दिव=स्वर्ग।

निर्वाणनायको[८] नित्यो[९] नीलजीमूतसन्निभः[१०] ।
कलाक्षयश्च[११] सर्वज्ञो[१२] कमलारूपतत्परः[१३] ॥११७॥
हृषीके[१४] शो पीतवासा[१५] वसुदेवप्रियात्मजः[१६] ।
नन्दगोपकुमारार्यो[१७] नवनीताशनो[१८] विभुः[१९] ॥११८॥
पुराणपुरुषः[२०] श्रेष्ठो[२१] शङ्खपाणिः[२२] सुविक्रमः[२३] ।
अनिरुद्धः[२४] चक्ररथः[२५] शार्ङ्गपाणिः[२६] चतुर्भुजः[२७] ॥११९॥
गदाधरः[२८] सुरार्तिघ्नो[२९] गोविन्दो[३०] नन्दकायुधः[३१] ।
वृन्दावनचरः[३२] शौरिः[३३] वेणुवाद्यविशारदः[३४] ॥१२०॥

८ स्वर्ग के नायक ९ सदा विद्यमान १० नील मेघ के समान ११ अक्षय कलावान् १२ सब जाननेवाले १३ लक्ष्मीरूप में दत्तचित्त १४ दिव्य किरणवान् १५ पीत-वस्त्रधारी १६ वसुदेव के प्रिय आत्मज १७ नन्दगोप के बालकों में श्रेष्ठ १८ मक्खन खानेवाले १९ स्वामी २० अनादि पुरुष २१ श्रेष्ठ २२ शंखधारी २३ दिव्यपराक्रमी २४ निरोध-रहित २५ वर्तुल रथवान् २६ शार्ङ्गधन्वाधारी २७ चतु-र्भुज २८ गदाधारी २९ देवतों के दुःखनाशक ३० पृथ्वी में होनेवाले ३१ नन्दक अस्त्रधारी ३२ वृन्दावनविहारी ३३ शूर के वंशज ३४ वंशी बजाने में चतुर ।

---

८ निर्वाण-स्वर्ग । १० जीमूत-मेघ । ३१ नन्दक-अस्त्र का नाम

३५ ३६ ३७
तृणावर्तान्तको भीमसाहसो बहुविक्रमः ।
३८ ३९
शकटासुरसंहारी बकासुरविनाशनः ॥ १२१ ॥
४० ४१ ४२
धेनुकासुरसंहारी पूतनारिर्नृकेशरी ।
४३ ४४ ४५ ४६ ४७
पितामहो गुरुः साक्षी प्रत्यगात्मा सदाशिवः १२२
४८ ४९ ५० ५१ ५२
अप्रमेयो प्रभुः प्राज्ञोऽप्रतर्क्यः स्वप्नवर्द्धनः ।
५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९
धन्यो मान्यो भवो भावो धीरः शान्तो जगद्गुरुः ।
६० ६१ ६२ ६३ ६४
अन्तर्यामीश्वरो दिव्यो दैवज्ञो देवसंस्तुतः ।
६५ ६६ ६७ ६८
क्षीराब्धिशयनो धाता लक्ष्मीवान् लक्ष्मणाग्रजः ॥

३५ तृणावर्त के काल ३६ बड़े पराक्रमी ३७ बड़े विक्रमी ३८ शकटासुर के संहारकर्ता ३९ बकासुर के नाशक ४० धेनुकासुर के संहारकारी ४१ पूतना के शत्रु ४२ मनुष्यों में सिंह ४३ पितरों के उत्पादक ४४ संसार के गुरु ४५ सर्वत्र विद्यमान ४६ सबसे पृथक् ४७ सदा कल्याणकारी ४८ उपमारहित ४९ समर्थ ५० बुद्धिमान् ५१ बुद्धि से परे ५२ स्वप्न के द्वारा वर्द्धक ५३ सर्वपूज्य ५४ सर्वमान्य ५५ संसाररूप ५६ भावनारूप ५७ धैर्यवान् ५८ सहनशील ५९ संसार के मान्य ६० सर्वव्यापक ६१ जड़-चैतन्य के स्वामी ६२ ध्यान करने योग्य ६३ त्रिकालज्ञ ६४ देवताओं से स्तुत ६५ क्षीरशायी ६६ धारणकर्ता ६७ धनी ६८ रामरूप ।

---

४२ नृ=मनुष्य, केशरी=सिंह ।

धात्रीपतिरमेयात्मा[६९] चन्द्रशेखरपूजितः[७०] ।[७१]
लोकसाक्षी[७२] जगच्चक्षुः[७३] पुण्यचारित्रकीर्तनः[७४]॥१२५॥
कोटिमन्मथसौन्दर्यो[७५] जगन्मोहनविग्रहः[७६] ।
मन्दस्मिततनुर्गोपगोपिकापरिवेष्टितः[७७][७८] ॥ १२६ ॥
फुल्लारविन्दनयनः[७९] चाणूरान्ध्रनिषूदनः[८०] ।
इन्दीवरदलश्यामो[८१] बर्हिबर्हावतंसकः[८२] ॥ १२७ ॥
मुरलीनिनदाह्लादो[८३] दिव्यमाल्याम्बरावृतः[८४] ।
सुकपोलयुगः[८५] सुभ्रूयुगलः[८६] सुललाटकः[८७] ॥ १२८ ॥

६९ पृथ्वी के पति ७० आत्मा से परे ७१ चन्द्रशेखर से पूजित ७२ संसार के दर्शक ७३ संसार के नेत्र ७४ जिनका पवित्र चरित्र कीर्तन करने योग्य ७५ कोटि काम के समान सुन्दर ७६ संसार के मोहनरूप ७७ मंदहास्ययुक्त शरीर ७८ गोप-गोपियों से वेष्टित ७९ फूले कमल के समान नेत्र ८० चाणूर तथा अंध्र दैत्य के नाशक ८१ नील कमल के समान श्याम ८२ मयूरपुच्छमुकुटधारी ८३ मुरली बजाने के आनन्दी ८४ सुन्दर माला तथा सुन्दर वस्त्र से आवृत ८५ सुन्दर दोनों कपोल ८६ सुन्दर दोनों भौंहें ८७ सुन्दर चौड़ा ललाट ।

---

७९ अरविन्द-कमल । ८१ इन्दीवर-नील कमल । ८२ बर्हि-मयूर, बर्ह-पुच्छ, अवतंस-मुकुट ।

कम्बुग्रीवो[८८] विशालाक्षो[८९] लक्ष्मीवान्[९०] शुभलक्षणः[९१] ।
पीनवक्षाश्चतुर्बाहुश्चतुर्मूर्तिस्त्रिविक्रमः[९२] [९३] [९४] [९५] ॥१२९॥
कलङ्करहितः[९६] शुद्धो[९७] दुष्टशत्रुनिवर्हणः[९८] ।
किरीटकुण्डलधरः[९९] कटकाङ्गदमण्डितः[१००] ॥ १३० ॥
मुद्रिकाभरणोपेतः[१] कटिसूत्रविराजितः[२] ।
मञ्जीररञ्जितपदः[३] सर्वाभरणभूषितः[४] ॥ १३१ ॥
विन्यस्तपादयुगलो[५] दिव्यमङ्गलविग्रहः[६] ।
गोपिकानयनानन्दः[७] पूर्णचन्द्रनिभाननः[८] ॥१३२॥

८८ शंख के समान ग्रीवा ८९ विशाल नेत्र ९० श्रीमान् ९१ दिव्य लक्षणयुक्त ९२ पुष्ट वक्षःस्थल ९३ चतुर्भुज ९४ चतुर्मूर्ति ९५ तीन लोक नापनेवाले ९६ कलंकरहित ९७ विकाररहित ९८ दुष्ट तथा शत्रुओं के नाशक ९९ किरीट तथा कुंडलधारी १०० कटक तथा विजायठधारी ।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे अष्टमः शतकः ।

१ मुद्रिका आभरण से भूषित २ कटिसूत्र से शोभित ३ महावर से रँगे चरणवाले ४ सम्पूर्ण आभरणों से आभूषित ५ भक्तार्थ दोनों चरणों के स्थापनकर्ता ६ दिव्यमंगलरूप ७ गोपिकानयनों के आनन्ददाता ८ पूर्णचन्द्र के समान मुख।

---

८८ कंबु-शंख। ९२ पीन-पुष्ट। ९४ चतुर्मूर्ति-वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध। ९५ त्रि-तीन लोक, विक्रम-पराक्रम।

समस्तजगदानन्दः सुन्दरो लोकनन्दनः ।
यमुनातीरसञ्चारी राधामन्मथवैभवः ॥ १३३ ॥
गोपनारीप्रियो दान्तो गोपीवस्त्रापहारकः ।
शृङ्गारमूर्तिः श्रीधामा तारकोमूलकारणम्॥१३४॥
सृष्टिसंरक्षणोपायः क्रूरासुरविभञ्जनः।
नरकासुरसंहारी मुरारि वैरिमर्दनः ॥ १३५ ॥
आदितेयप्रियो दैत्यभीकरो यदुशेखरः ।
जरासन्धकुलध्वंसी कंसारातिः सुविक्रमः ॥१३६॥

९ समस्त संसार के आनन्ददाता १० सुन्दर ११ तीनों लोकों के आनन्ददाता १२ यमुना तीर विचरनेवाले १३ श्रीराधा मन्मथ के धन १४ गोपनारियों के प्रिय १५ दान के अन्त १६ गोपियों के वस्त्र हरणकर्ता १७ शृंगार की मूर्ति १८ रुक्मिणी धाम के प्रकाशक १९ त्रिदेवमूर्ति २० संसार के मूलकारण २१ सृष्टिरक्षण के उद्यमी २२ क्रूर असुरों के नाशक २३ नरकासुर के संहारकर्ता २४ मुर दैत्य के शत्रु २५ वैरिमर्दनकारी २६ देवताओं के प्रिय २७ दैत्यों के भयदाता २८ यदुवंश में श्रेष्ठ २९ जरासंध के कुलनाशक ३० कंस के शत्रु ३१ दिव्यपराक्रमी ।

---

२६ आदितेय=देवता । ३० आराति=शत्रु ।

पुण्यश्लोकः[३२] कीर्तनीयो[३३] यादवेन्द्रो[३४] जगन्नुतः[३५]।
रुक्मिणीरमणः[३६] सत्यभामाजाम्बवतीप्रियः[३७] १३७॥
मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपाश्रितः[३८]।
सुधाकरकुले[३९] जातोऽनन्तप्रबलविक्रमः[४०] ॥१३८॥
सर्वसौभाग्यसम्पन्नो[४१] द्वारकानगरे[४२] स्थितः।
भद्रासूर्यसुतानाथो[४३] लीलामानुषविग्रहः[४४] ॥१३९॥
सहस्रषोडशस्त्रीशो[४५] भोगमोक्षैकदायकः[४६]।
वेदान्तवेद्यः[४७] संवेद्यो[४८] वैद्यो[४९] ब्रह्माण्डनायकः[५०] १४०

३२ पुण्य कथावाले ३३ कीर्तनयोग्य ३४ यादवों में श्रेष्ठ ३५ जगत् में स्तुत ३६ रुक्मिणीरमण ३७ सत्यभामा और जाम्बवती के प्रिय ३८ मित्रविन्दा नाग्नजिती लक्ष्मणा से उपाश्रित ३९ चंद्रवंशी ४० अनन्त प्रबल विक्रम के धारण-कर्ता ४१ सम्पूर्ण सौभाग्यों से पूर्ण ४२ द्वारका के वासी ४३ कल्याणदात्री यमुना के नाथ ४४ लीला के निमित्त मनुष्यतनुधारी ४५ सोलह हजार स्त्रियों के ईश ४६ भोग तथा मोक्ष के दाता ४७ वेदान्त द्वारा जानने योग्य ४८ अच्छे प्रकार जानने योग्य ४९ भवरोग चिकित्सक ५० अखिल ब्रह्मांडों के नाथ।

---

३९ सुधाकर=चन्द्रमा। ४३ भद्र=कल्याण, सूर्यसुता=यमुना। ४४ विग्रह=शरीर।

गोवर्द्धनधरो[५१] नाथो[५२] सर्वजीवदयापरः[५३] ।
मूर्तिमान्[५४] सर्वभूतात्मा[५५] आर्तत्राणपरायणः[५६]॥१४१॥
सर्वज्ञः[५७] सर्वसुलभः[५८] सर्वशास्त्रविशारदः[५९] ।
षट्गुणैश्वर्यसंपन्नः[६०] पूर्णकामो[६१] धुरन्धरः[६२] ॥१४२॥
महानुभावः[६३] कैवल्यनायको[६४] लोकनायकः[६५] ।
आदिमध्यान्तरहितः[६६] शुद्धसात्त्विकविग्रहः[६७] ॥१४३॥
असमानः[६८] समस्तात्मा[६९] शरणागतवत्सलः[७०] ।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणं[७१] सर्वकारणम्[७२] ॥१४४॥

५१ गोवर्द्धन धारणकर्ता ५२ स्वामी ५३ सम्पूर्ण जीवों पर दया करनेवाले ५४ देहधारी ५५ सब प्राणियों की आत्मा ५६ दुखियों की रक्षा में तत्पर ५७ सब कुछ जाननेवाले ५८ सबको सुलभ ५९ सब शास्त्रों के पंडित ६० छः प्रकार के ऐश्वर्य से पूर्ण ६१ सबके मनोरथपूरक ६२ संसारचक्र के धारणकर्ता ६३ दिव्य स्वभाववाले ६४ स्वर्ग के स्वामी ६५ लोकों के नायक ६६ आदि मध्य अन्त इन अवस्थाओं से रहित ६७ शुद्ध सतोगुणी शरीरवाले ६८ उपमारहित ६९ चराचर में व्याप्त ७० शरणागत के रक्षक ७१ उत्पत्ति स्थिति तथा संहार के कारण ७२ सबके कारण ।

---

६० षट्गुण=संधि आदि छः गुण । ६४ कैवल्य=स्वर्ग ।

७३ ७४ ७५
गम्भीरः सर्वभावज्ञः सच्चिदानन्दविग्रहः ।
७६ ७७ ७८ ७९
विष्वक्सेनः सत्यसन्धःसत्यवाक्सत्यविक्रमः १४५
८० ८१ ८२
सत्यव्रतः सत्यरतः सत्यधर्मपरायणः ।
८३ ८४
आपन्नार्तिप्रशमनो द्रौपदीमानरक्षकः ॥ १४६ ॥
८५ ८६ ८७
कन्दर्पजनकः प्राज्ञो जगन्नाटकवैभवः ।
८८ ८९ ९०
भक्तवश्यो गुणातीतः सर्वैश्वर्यप्रदायकः ॥१४७॥
९१ ९२
दमघोषसुतद्वेषी बाणबाहुविखण्डनः ।
९३ ९४ ९५
भीष्मभक्तिप्रदो दिव्यः कौरवान्वयनाशनः १४८

७३ गम्भीर ७४ सब भावों के ज्ञाता ७५ सत् चित् आनन्दरूप ७६ सर्वत्र सेनावान् ७७ सत्य की राशि ७८ सत्य वाणीवान् ७९ सत्यपराक्रमी ८० सत्यसंकल्प ८१ सत्य में रत ८२ सत्यधर्म में संलग्न ८३ दुखियों के दुःखनाशक ८४ द्रौपदी के मानरक्षक ८५ काम के उत्पादक ८६ बुद्धिमान् ८७ जगज्जाल के सर्वस्व ८८ भक्तों के वश्य ८९ गुणों से परे ९० सम्पूर्ण ऐश्वर्यों के दाता ९१ शिशुपाल के शत्रु ९२ बाणबाहु के खण्डनकर्ता ९३ भीष्म के भक्तिदाता ९४ दिव्य ९५ कौरववंश के नाशक ।

---

७३ गम्भीर भी पाठ है, जिसका अर्थ है 'वेदवाचो गच्छन्ति यत्र'। ७५ सत्-निवृत्ति, चित्-चेतना, आनन्द=सुख, विग्रह=शरीर। ७६ विष्वक्-सर्वत्र। ८३ आपन्न-दुखी, आर्ति-दुःख। ९१ दमघोषसुत=शिशुपाल। ९५ अन्वय=वंश।

कौन्तेयप्रियबन्धुश्च पार्थस्यन्दनसारथिः ।
नारसिंहो महावीरः स्तम्भजातो महाबलः १४९
प्रह्लादवरदः सत्यो देवपूज्योऽभयङ्करः ।
उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिबन्धनः ॥१५०॥
गजेन्द्रवरदः स्वामी सर्वदेवनमस्कृतः ।
शेषपर्यङ्कशयनो वैनतेयरथो जयी ॥ १५१ ॥
अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्नः पूर्णमानसः ।
योगेश्वरेश्वरः साक्षी क्षेत्रज्ञो ज्ञानदायकः १५२

९६ कुन्ती-पुत्रों के प्रियबंधु ९७ पार्थ-स्यंदन के सारथी ९८ नरसिंह के अवतार ९९ वीरमान्य १०० स्तम्भ से उत्पन्न ।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे नवमः शतकः ।

१ बड़े बली २ प्रह्लाद के वरदाता ३ सत्य ४ देवताओं के पूज्य ५ अभय के दाता ६ इन्द्र के सन्निकटी ७ इन्द्र से श्रेष्ठ ८ वामनरूप ९ बलि के बन्धनकर्ता १० गजेन्द्र के वरदाता ११ स्वामी १२ सम्पूर्ण देवताओं से स्तुत १३ शेषशायी १४ गरुड़ के सवार १५ जयविजय पार्षदवान् १६ अविच्छिन्न बल और ऐश्वर्य से संपन्न १७ संतुष्ट १८ योगेश्वरों के ईश्वर १९ दर्शक २० शरीर के ज्ञाता २१ ज्ञान के दाता ।

---

६ उप=समीप । ७ अवरज=लघु । १४ वैनतेय=गरुड़ । १६ अव्याहत=अवकाशरहित । २० क्षेत्र=शरीर ।

योगिहृत्पङ्कजावासो[२२] योगमायासमन्वितः[२३] ।
नादबिन्दुकलातीतः[२४] चतुर्वर्गफलप्रदः[२५] ॥ १५३ ॥
सुषुम्णामार्गसंचारी[२६] देहस्थान्तरसंस्थितः[२७] ।
देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी[२८] चेतःप्रसादकः[२९] ॥१५४॥
सूक्ष्मः[३०] सर्वगतो[३१] देही[३२] ज्ञानदर्पणगोचरः[३३] ।
तत्त्वत्रयात्मकोऽव्यक्तः[३४] कुण्डलीसमुपाश्रितः[३५] १५५
ब्रह्मण्यः[३७] सर्वधर्मज्ञो[३८] शान्तो[३९] दान्तो[४०] गतक्लमः[४१] ।
श्रीनिवासः[४२] सदानन्दो[४३] विश्वमूर्तिर्महाप्रभुः[४४] १५६

२२ योगियों के हृदय-कमल के वासी २३ योगमाया से युक्त २४ स्वर तथा बिन्दु की कला से परे २५ वेद के फल-दाता २६ सुषुम्णा नाड़ी के मार्ग में विचरनेवाले २७ हृदय के वासी २८ देह इंद्रिय मन और प्राण के साक्षी २९ चित्त के आनन्ददाता ३० अणुमात्र ३१ संसार जिसमें लीन हो ३२ साकार ३३ ज्ञानरूपी दर्पण में देख पड़नेवाले ३४ तत्त्व-त्रयरूप ३५ अलक्ष्य ३६ जीवात्मा में सम्यक् उपस्थित ३७ तप के रक्षक ३८ सब धर्मों के ज्ञाता ३९ सहनशील ४० जितेन्द्रिय ४१ श्रमरहित ४२ लक्ष्मी के निवासस्थान ४३ सदा आनन्दरूप ४४ संसाररूप ४५ बड़े प्रभाववाले ।

---

२४ नाद=स्वर वा वेद, बिन्दु=अनुस्वार । २५ चतुर्वर्ग=वेद । २६ सुषुम्णा=ब्रह्मरंध्रस्था नाड़ी । ३४ तत्त्वत्रय=जीव, ईश्वर और माया । ३६ कुण्डली=जीवात्मा । ३७ ब्रह्मण्य=तप । ४१ क्लम=श्रम ।

सहस्रशीर्षा[४६] पुरुषः[४७] सहस्राक्षः[४८] सहस्रपात्[४९] ।
समस्तभुवनाधारः[५०] समस्तप्राणरक्षकः[५१] ॥ १५७ ॥
समस्तः[५२] सर्वभावज्ञो[५३] गोपिकाप्राणवल्लभः[५४] ।
नित्योत्सवो[५५] नित्यसौख्यो[५६] नित्यश्रीर्नित्यमङ्गलः[५७]१५८
व्यूहार्चितो[५९] जगन्नाथः[६०] श्रीवैकुण्ठपुराधिपः[६१] ।
पूर्णानन्दघनीभूतो[६२] गोपवेशधरो[६३] हरिः[६४] ॥१५९॥
कलायकुसुमश्यामो[६५] कोमलश्शान्तविग्रहः[६६] ।
गोपाङ्गनावृतो[६८]ऽनन्तो[६९] वृन्दावनसमाश्रयः[७०] ॥१६०॥

४६ अनन्त शिरधारी ४७ पुरुषरूप ४८ अनन्तनेत्रधारी ४९ असंख्य चरणवान् ५० सम्पूर्ण भुवनों के आधार ५१ अखिल जीवरक्षक ५२ खंडरहित ५३ सम्पूर्ण भावों के ज्ञाता ५४ गोपियों के प्राणनाथ ५५ नित्य उत्सवी ५६ नित्य सुखी ५७ नित्य शोभायुक्त ५८ नित्य मंगलरूप ५९ बल से पूजित ६० जगत् के नाथ ६१ श्रीवैकुंठपुर के स्वामी ६२ पूर्ण आनन्द से भरे ६३ गोपवेशधारी ६४ हारक ६५ कलायकुसुम के समान श्याम ६६ कोमलचित्त ६७ शान्त-रूप ६८ गोपाङ्गनाओं से घिरे ६९ अन्तरहित ७० वृन्दा-वनविहारी ।

---

५९ व्यूह=किला । ६५ कलाय=मटर ।

वेणुवादरतः[७१] श्रेष्ठो[७२] देवानां[७३] हितकारकः ।
बालक्रीडासमासक्तो[७४] नवनीतस्य[७५] तस्करः ॥१६१॥
गोपालकामिनीजारचौर[७६]जारशिखामणिः[७७] ।
परञ्ज्योतिः[७८] पराकाशः[७९]परावासः[८०]परिस्फुटः[८१]॥१६२॥
अष्टादशाक्षरो[८२] मन्त्रो[८३] व्यापको[८४] लोकपावनः ।
सप्तकोटिमहामन्त्रशेखरो[८५] देवशेखरः[८६] ॥१६३॥
विज्ञानज्ञानसंधानः[८७] तेजोराशिर्[८८]जगत्पतिः[८९] ।
भक्तलोकप्रसन्नात्मा[९०] भक्तमन्दारविग्रहः[९१] ॥ १६४॥

७१ वंशी बजाने में रत ७२ प्रधान ७३ देवताओं के हितकारक ७४ बालकों की क्रीड़ा में सम्यक् आसक्त ७५ नवनीत के तस्कर ७६ गोपाल-रमणियों के वासना-नाशक ७७ सच्चित्तचौर तथा सद्बुद्धि जारों के शिखामणि ७८ सबसे उत्कृष्ट ज्योति ७९ दिव्य निराकार ८० दिव्य निकुंज के वासी ८१ खिले हुए ८२ अष्टादश अक्षर के मंत्र-रूप ८३ मंत्र में व्याप्त ८४ संसार के पवित्रकर्ता ८५ सप्त-कोटि महामंत्रों के मुकुट ८६ देवताओं के मुकुट ८७ विशेष ज्ञान के संधानकर्ता ८८ तेज के समूह ८९ जगत् के पति ९० भक्तों के दयालु ९१ भक्तों के कल्पवृक्ष ।

---

७६ जार=वासनानाशक । ९१ मंदार=कल्पवृक्ष ।

भक्तदारिद्र्यदमनो[९२] भक्तानां प्रीतिदायकः[९३] ।
भक्ताधीनमनःपूज्यो[९४] भक्तलोकशिवङ्करः[९५] ॥१६५॥
भक्ताभीष्टप्रदः[९६] सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः[९७] ।
अपारकरुणासिन्धुर्भगवान्[९८] भक्ततत्परः[९९] ॥१६६॥
इतिश्रीराधिकानाथसहस्रं[१००] नाम कीर्तितम् ।
स्मरणात्पापराशीनांखण्डनंमृत्युनाशनम्॥१६७॥

९२ भक्तों के दरिद्रनाशक ९३ भक्तों के प्रीतिदाता ९४ जितेन्द्रिय भक्तों से पूज्य ९५ भक्तों के कल्याणकारी ९६ भक्तों के मनोरथपूरक ९७ भक्तों के सम्पूर्ण पापों के नाशक ९८ गम्भीर करुणा के सिंधु ९९ भगवान् १०० भक्तों में दत्तचित्त ।

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रे दशमः शतकः ।
श्रीरस्तु शुभमस्तु ।

श्रीमहादेवजी कहते हैं—हे उमा ! यह श्रीराधिकानाथ के सहस्रनाम का कीर्तन किया, जिसके स्मरणमात्र से पापराशियों का खंडन और मृत्यु का नाश होता है ॥ १६७ ॥

---

९४ भक्ताधीनमन=जितेंद्रिय ।

वैष्णवानां प्रियकरं महारोगनिवारणम् ।
ब्रह्महत्या सुरापानं परस्त्रीगमनं तथा ॥१६८॥
परद्रव्यापहरणं परद्रोहसमन्वितम् ।
मानसं वाचिकं कायं यत्पापं पापसम्भवम् ।१६९॥
सहस्रनामपठनात् सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ।
महादारिद्र्ययुक्तोऽपिवैष्णवोविष्णुभक्तिमान् १७०
कार्त्तिक्यां यः पठेद्रात्रौ शतमष्टोत्तरं क्रमात् ।
पीताम्बरधरोधीमान्सुगन्धैःपुष्पचन्दनैः॥१७१॥
पुस्तकं पूजयित्वाऽस्य नैवेद्यादिभिरेव च ।

यह वैष्णवों का प्रिय तथा महारोगों का निवारक है । ब्रह्महत्या, सुरापान, परस्त्रीगमन ॥ १६८ ॥ दूसरे के द्रव्य की चोरी, दूसरे का द्रोह, मन, वचन, शरीर से उत्पन्न पाप और पाप से उत्पन्न फल ॥ १६९ ॥ इस श्रीसहस्रनाम के पाठमात्र से तत्क्षण नष्ट होते हैं । महादरिद्रतायुक्त होने पर भी जो बुद्धिमान् विष्णुभक्त वैष्णव ॥ १७० ॥ कार्त्तिक की अमावास्या को रात्रि में पीताम्बर धारण करके सुगंध पुष्प चन्दन से पुस्तक की पूजा करके क्रम से १०८ पाठ करते हैं वे दरिद्रता से मुक्त हो जाते हैं ॥ १७१ ॥

राधाध्यानाङ्कितो धीरो वनमालाविभूषितः १७२॥
शतमष्टोत्तरं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ।
चैत्रे शुक्ले च कृष्णे च कुहूसंक्रान्तिवासरे ॥१७३॥
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।
तुलसीमालया युक्तो वैष्णवो भक्तितत्परः ॥१७४॥
रविवारे च शुक्ले च द्वादश्यां श्राद्धवासरे ।
ब्राह्मणं पूजयित्वा च भोजयित्वा विधानतः१७५
पठेन्नामसहस्रं च ततः सिद्धिमवाप्नुयात् ।

वनमाला-विभूषित धीर पुरुष श्रीराधाजी के ध्यान में लग्न हो नैवेद्यादि षोडशोपचार से इस पुस्तक का पूजन-कर ।। १७२ ।। हे देवि ! १०८ सहस्रनाम के पाठ चैत्र शुक्ल वा कृष्ण में अमावास्या वा संक्रांति में करे ।।१७३।। युक्तिपूर्वक इस प्रकार पाठ करनेवाला वैष्णव तत्काल त्रैलो-क्य को मोहित करने में समर्थ होता है । तुलसी-मालाधारी वैष्णव विष्णुभक्ति में तत्पर हो ।।१७४।। रविवार के दिन शुक्लपक्ष में द्वादशी को वा श्राद्ध के दिन ब्राह्मण का पूजन-कर विधानपूर्वक उसे भोजन करा ।।१७५।। सहस्रनामपाठ करे । ऐसा करने से सिद्धि प्राप्ति होती है । दीपमालिका की रात्रि में जो वैष्णव जन निरंतर सदा पाठ

महानिशायांसततं वैष्णवो यः पठेत्सदा ॥१७६॥
देशान्तरगता लक्ष्मीः समायाति न संशयः ।
त्रैलोक्ये च महादेव्यः सुन्दर्यः काममोहिताः १७७
मुग्धाः स्वयं समायान्ति वैष्णवं तं भजन्ति ताः।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात्१७८
गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ।
राजानो वश्यतां यान्ति किं पुनः क्षुद्रमानवाः १७९
सहस्र नामपठनात् श्रवणात् पूजनात् प्रिये ।
धारणात् सर्वमाप्नोतिवैष्णवोनात्र संशयः॥१८०॥

करें ॥ १७६ ॥ तो देशान्तर में गई हुई भी लक्ष्मी लौट आती है, इसमें संदेह नहीं, और त्रैलोक्य की महासुन्दरी पतिव्रता युवती स्त्रियाँ काम से मोहित हो ॥१७७॥ प्रसन्न-चित्त होकर स्वयं विवाहार्थ प्राप्त होती हैं। वैष्णवजन उनको तथा वे वैष्णवजनों को भजती हैं। रोगी रोग से छूट जाता है। बँधुवा बंधन से छूट जाता है ॥१७८॥ गर्भिणी पुत्र उत्पन्न करती है। कन्या उत्तम पति पाती है। राजा वशीभूत होते हैं, छोटे मनुष्यों की क्या कथा ॥ १७९ ॥ हे प्रिये ! सहस्रनाम के पाठ से, श्रवण से, पूजन से, धारण करने से, वैष्णवजन सब कुछ पाते हैं, इसमें सदेह नहीं॥१८०॥

वंशीवटे चान्यवटे तथा पिप्पलकेऽथवा ।
कदम्बपादपतले गोपालमूर्तिसन्निधौ ॥ १८१ ॥
यः पठेद्वैष्णवो नित्यं स याति हरिमन्दिरम् ।
कृष्णेनोक्तं राधिकायै मह्यं प्रोक्तं तया शिवे १८२
नारदाय मया प्रोक्तं नारदेन प्रकाशितम् ।
मया तुभ्यं वरारोहे प्रोक्तमेतत्सुदुर्लभम् ॥१८३॥
गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कथञ्चन ।
शठाय पापिने चैव लम्पटाय विशेषतः ॥१८४॥
न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ।

वंशीवट में अथवा किसी वट में, पिप्पल वृक्ष के तले अथवा श्रीगोपालजी की मूर्ति के समीप ॥१८१॥ जो वैष्णव-जन नित्य ही पढ़ते हैं वे अन्त में हरि के मन्दिर में जाते हैं। हे शिवे ! इसको श्रीकृष्ण महाराज ने श्रीराधाजी से कहा और श्रीराधाजी ने मुझसे कहा ॥१८२ ॥ मैंने नारदजी से कहा और नारदजी ने इसका प्रकाश किया। हे वरारोहे ! इस अत्यन्त दुर्लभ वस्तु को मैंने तुमसे कहा ॥ १८३ ॥ इसको युक्तिपूर्वक गुप्त रखना । इसका किसी प्रकार प्रकाश न करना। विशेष करके शठ, पापी और लम्पट को ॥१८४॥ कभी भी न देना, न देना, न देना । जो अपना शिष्य शान्त

देयं शान्ताय शिष्याय विष्णुभक्तिरताय च १८५
गोदानब्रह्मयज्ञस्य वाजपेयशतस्य च ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलं पाठे भवेद्ध्रुवम् ॥१८६॥
मोहनं स्तम्भनं चैव मारणोच्चाटनादिकम् ।
यद्यद्वाञ्छति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति वैष्णवः १८७॥
एकादश्यां नरः स्नात्वा सुगंधिद्रव्यतैलकैः ।
आहारं ब्राह्मणे दत्वा दक्षिणां स्वर्णभूषणम् १८८॥
तत आरम्भकर्तास्य सर्वं प्राप्नोति मानवः ।
शतावर्तं सहस्रं च यः पठेद्वैष्णवो जनः ॥१८९॥

विष्णुभक्ति में रत हो उसे देना ॥ १८५ ॥ इसके पाठ करने से गोदान, ब्रह्मयज्ञ, सौ वाजपेय यज्ञ, सहस्र अश्वमेध यज्ञ का निश्चय फल होता है ॥ १८६ ॥ मोहन, स्तम्भन, मारण, उच्चाटनादिक जिस विषय की चित्त में वाञ्छा करता है वह वैष्णवजन पाता है ॥ १८७ ॥ एकादशी के दिन मनुष्य सुगन्ध द्रव्य आदि लगाकर स्नान करके ब्राह्मण को आहार तथा सुवर्ण-दक्षिणा वा स्वर्ण-आभूषण दे ॥१८८॥ आरम्भ करने से मनुष्य सब कुछ पाता है। सौ आवृत्ति वा सहस्र आवृत्ति जो वैष्णवजन करते हैं ॥१८९॥

श्रीवृन्दावनचन्द्रस्य प्रसादात्सर्वमाप्नुयात् ।
यद्गृहे पुस्तकं देवि पूजितं चैव तिष्ठति ॥१९०॥
न मारी न च दुर्भिक्षं नोपसर्गभयं क्वचित् ।
सर्पादिभूतयक्षाद्या नश्यन्त नाऽत्र संशयः १९१॥
श्रीगोपालो महादेवि वसेत्तस्य गृह सदा ।
यस्य गेहेसहस्रं च नाम्नां तिष्ठति पूजितम् १९२॥

इति श्रीसम्मोहनतन्त्रे श्रीपार्वतीश्वरसंवादे
श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीरस्तु ।

वे श्रीवृन्दावनचन्द्र के प्रसाद से सब कुछ पाते हैं । हे देवि ! जिस घर में प्रतिदिन पुस्तक का पूजन होता है ॥ १९० ॥ उस घर में महामारी, दुर्भिक्ष, उपसर्ग इत्यादि का भय कभी नहीं होता और सर्पादिक, भूत तथा यक्षादिक निस्सन्देह नाश को प्राप्त होते हैं ॥ १९१ ॥ हे देवेशि ! जिस घर में सहस्रनाम पूजित होता है उस घर में श्रीगोपाल महाराज सदा वास करते हैं ॥ १९२ ॥

इति श्रीसम्मोहनतन्त्रे श्रीपार्वतीश्वरसंवादे श्रीगोपाल-
सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीरस्तु शुभमस्तु ।

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा तेजकुमार प्रेस, (प्रा०) लि० में मुद्रित ।

परिचय

मैं सरयूपारीण ब्राह्मण मामखोर ग्राम का शुक्ल हूँ। मेरा गर्ग गोत्र है। यह स्थान गोरखपूर जिले में है। प्रारब्धवश मेरे पूर्वज श्रीबाबा दूधनाथजी श्रीअयोध्याजी में अग्निकुण्ड पर आकर रहे। इनके ज्येष्ठ पुत्र का विवाह कसारी ग्राम में हुआ। वहीं ज्ञान की वृद्धि हुई। यह स्थान श्रीकामाक्षा भगवती के मन्दिर से सुशोभित गोमती नदी के तट पर तहसील रामसनेहीघाट जिला बाराबंकी में है।

श्रीबाबा दूधनाथजी के पुत्र श्रीपण्डित विश्रामजी बड़े धीरशान्त और विद्वान् हुए। साक्षात् विश्रामरूप ही थे और ये वेदान्त शास्त्र के वेत्ता थे। इनके पुत्र श्रीपंडित मणिरामजी व्याकरण शास्त्र के विद्वान् हुए। इनके पुत्र शान्तरूप भगवद्भक्त श्रीपंडित आनन्दीरामजी तन्त्रशास्त्र के वेत्ता पवित्र और ब्राह्मणों से पूजित हुये। इनके पुत्र श्रीपंडित गिरिजारामजी ज्योतिर्विद् थे। इन्होंने नवाबी के कठिन समय में ईश्वर के प्रसन्नतार्थ अनेक बार चारों धाम की यात्रा की।

इनके चार पुत्र हुए, श्रीपंडित शिवचरणजी, श्रीपंडित रामदयालुजी, श्रीपंडित इन्द्रदत्तजी और श्रीपंडित रामचरणजी। इनमें पंडित शिवचरणजी ज्योतिर्विद् थे। पंडित रामदयालुजी न्यायशास्त्र के वेत्ता थे। पंडित इन्द्रदत्तजी वैदिक थे और सबसे छोटे श्रीपंडित रामचरणजी बड़े महात्मा, बड़े प्रतापी, बड़े विद्वान्, साक्षात् लक्ष्मी के निवासस्थान ही हुए। ये श्री १०८ गुरुवर महाराज उमा-

पतिजी श्रीअयोध्यावासी से विद्याध्ययनकर उन्हीं की आज्ञा से बहरामघाट में आकर रहे और पूज्यपाद श्री १०८ परमवैष्णव महाराज गोपालदासजी तिलोकपुरवासी से दीक्षा ग्रहण कर संवत् १९३९ तदनुसार सन् १८८३ ईस्वी में स्वर्ग को सिधारे।

इनके तीन पुत्र हुए। ज्येष्ठ पुत्र का बाल्यावस्था ही में देहान्त हो गया। श्रीपंडित सीतारामजी तथा रामधन जीवित रहे। इनमें श्रीपंडित सीतारामजी शास्त्री बड़े धुरंधर विद्वान् तथा बड़े प्रतापी हुए। कालवश ये निस्संतान २४ जून सन् १९२३ ईस्वी को एकादशी रविवार के दिन मध्याह्नसमय कालगति को प्राप्त हुए।

भगवान् की असीम कृपा से मेरे दो पुत्र चिरंजीवी हरिहरदत्त तथा चिरंजीवी विष्णुदत्त हैं जो दोनों इन्ट्रेंस तक पढ़े हैं और दो पौत्र चिरंजीवी रमाकान्त तथा चिरंजीवी लक्ष्मीकान्त हैं, यह चारों श्रीजगज्जननी जगदम्बा के कमलवत् नेत्रों के कृपारूपी अमृत से जीनेवाले हैं, यह मेरा परिचय है।

सज्जनों का दयापात्र,

रामधन

अस्य श्री गोपाल

अस्य श्री गोपाल - सहस्रनाम - स्तोत्रमंत्रस्य श्री नारद-ऋषिः अनुष्टुप् छंदः श्री गोपालो देवता कामो बीजम् माया शक्तिः चंद्रः कीलकम् श्रीकृष्ण - चंद्रभक्तिरूप - फलप्राप्तये श्री गोपाल सहस्रनाम - जपे विनियोगः ।।

अथ ध्यानम्

कस्तूरी-तिलकं ललाट-पटले वक्षः-स्थले कौस्तुभं ।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुं करे कंकणं ।।
सर्वांगे हरिचंदनं सुललितं कंठे च मुक्तावलिम् ।
गोपस्त्री-परिवेष्टितो विजयते गोपाल-चूडामणिः ।।

।। इति ध्यानम् ।।

ॐ देवाय नमः १
कामदेवाय नमः २
कामबीजशिरोमणये नमः ३
श्रीगोपालाय नमः ४
महीपालाय नमः ५
सर्ववेदांतपारगाय नमः ६
धरणीपालकाय नमः ७
धन्याय नमः ८
पुंडरीकाय नमः ९
सनातनाय नमः १०
गोपतये नमः ११
भूपतये नमः १२
शास्त्रे नमः १३
प्रहर्त्रे नमः १४
विश्वतोमुखाय नमः १५
आदिकर्त्रे नमः १६
महाकर्त्रे नमः १७
महा कालाय नमः १८
प्रतापवते नमः १९
जगज्जीवाय नमः २०
जगद्धात्रे नमः २१
जगद्भर्त्रे नमः २२
जगद्वसवे नमः २३
मत्स्याय नमः २४
भीमाय नमः २५
कुहूभर्त्रे नमः २६
हर्त्रे नमः २७
वाराहमूर्तिमते नमः २८
नारायणाय नमः २९
हृषीकेशाय नमः ३०
गोविंदाय नमः ३१
गरुडध्वजाय नमः ३२
गोकुलेंद्राय नमः ३३
महाचंद्राय नमः ३४
शर्बरीप्रियकारकाय नमः ३५
कमलामुखलीलाक्षाय नमः ३६
पुंडरीक शुभावहाय नमः ३७
दुर्वाससे नमः ३८
कपिलाय नमः ३९
भौमाय नमः ४०
सिंधुसागरसंगमाय नमः ४१
गोविंदाय नमः ४२
गोपतये नमः ४३
गोत्राय नमः ४४
कालिंदीप्रेमपूरकाय नमः ४५
गोपस्वामिने नमः ४६

गोकुलेंद्राय नमः ४७
गोवर्धनवर प्रदाय नमः ४८
नंदादिगोकुलत्रात्रे नमः ४९
दात्रे नमः ५०
दारिद्र्यभंजनाय नमः ५१
सर्वमंगलदात्रे नमः ५२
सर्वकामप्रदायकाय नमः ५३
आदिकर्त्रे नमः ५४
महीभर्त्रे नमः ५५
सर्व सागरसिंधुजाय नमः ५६
गजगामिने नमः ५७
गजोद्धारिणे नमः ५८
कामिने नमः ५९
कामकलानिधये नमः ६०
कलंक रहितचंद्राय नमः ६१
बिंबास्याय नमः ६२
बिंबसत्तमाय नमः ६३
मालाकाराय नमः ६४
कृपाकाराय नमः ६५
कोकिलस्वर भूषणाय नमः ६६
रामाय नमः ६७
नीलांबराय नमः ६८
देवाय नमः ६९
हलिने नमः ७०
दुर्दममर्दनाय नमः ७१
सहस्राक्षपुरीभेत्रे नमः ७२
महामारीविनाशनाय नमः ७३
शिवाय नमः ७४
शिवतमाय नमः ७५
भेत्रे नमः ७६
बलारातिप्रपूजकाय नमः ७७
कुमारीवरदायिने नमः ७८
वरेण्याय नमः ७९
मीनकेतनाय नमः ८०
नराय नमः ८१
नारायणाय नमः ८२
धीराय नमः ८३
राधापतये नमः ८४
उदारधिये नमः ८५
श्रीपतये नमः ८६
श्री निधये नमः ८७
श्रीमते नमः ८८
मापतये नमः ८९
प्रतिराजघ्ने नमः ९०

वृन्दापतये नमः ९१ कुलग्रामिणे नमः ९२
धामिने नमः ९३ ब्रह्मणे नमः ९४
सनातनाय नमः ९५ रेवतीरमणाय नमः ९६
रामाय नमः ९७ चंचलाय नमः ९८
चारुलोचनाय नमः ९९ रामायण शरीराय नमः १००
रामिणे नमः १०१ रामाय नमः १०२
श्रियः पतये नमः १०३ शर्वराय नमः १०४
शर्वरीशर्वाय नमः १०५ सर्वत्रशुभदायकाय नमः १०६
राधाराधयिताय नमः १०७ राधिने नमः १०८
राधाचित्तप्रमोदकायनमः १०९ राधारतिसुखोपेतायनमः ११०
राधामोहनतत्परायनमः १११ राधावशीकराय नमः ११२
राधाहृदयांभोजषट्पदाय
नमः ११३ राधालिंगनसमोहायनमः ११४
राधानर्तनकौतुकाय नमः ११५ राधासंजातसंप्रीतये नमः ११६
राधाकामफलप्रदायनमः ११७ वृन्दापतये नमः ११८
कोशनिधये नमः ११९ लोकशोकविनाशकायनमः १२०
चंद्रापतये नमः १२१ चंद्र पतये नमः १२२
चंडकोदंड-भंजनाय नमः १२३ रामाय नमः १२४
दाशरथये नमः १२५ रामाय नमः १२६
भृगुवंश समुद्भवाय नमः १२७ आत्मारामाय नमः १२८
जित क्रोधाय नमः १२९ मोहाय नमः १३०
मोहांध, भंजनाय नमः १३१ वृषभानवे नमः १३२

भवाय नमः १३३ भावाय नमः १३४
काश्यपये नमः १३५ करुणा निधये नमः १३६
कोलाहलाय नमः १३७ हलिने नमः १३८
हालिने नमः १३९ हेलिने नमः १४०
हलधर प्रियाय नमः १४१ राधामुखाब्जमार्तंडायनमः१४२
भास्कराय नमः १४३ विरजाय नमः १४४
विधवे नमः १४५ विधये नमः १४६
विधात्रे नमः १४७ वरुणाय नमः १४८
वारुणाय नमः १४९ वारुणिप्रियाय नमः १५०
रोहिणीहृदयानंदिने नमः१५१ वसुदेवात्मजाय नमः १५२
वलिने नमः १५३ नीलांबराय नमः १५४
रौहिणेयाय नमः १५५ जरासंधवधाय नमः १५६
अमताय नमः १५७ नागाय नमः १५८
नवांभसे नमः १५९ बिरुदाय नमः १६०
वीरघ्ने नमः १६१ वरदाय नमः १६२
बलिने नमः १६३ गोपथाय नमः १६४
विजयिने नमः १६५ विदुषे नमः १६६
शिपिविष्टाय नमः १६७ सनातनाय नमः १६८
पर्शुरामवचोग्राहिणे नमः१६९ वरग्राहिणे नमः १७०
शृगालघ्ने नमः १७१ दम घोषोपदेष्ट्रे नमः १७२
रथग्राहिणे नमः १७३ सुदर्शनाय नमः १७४
वीरपत्नीयशस्त्रात्रे नमः १७५ जरा-व्याधि-विघातकाय नमः १७६

द्वारकावासतत्त्वज्ञायनमः १७७ हुताशनवरप्रदायनमः १७८
यमुनावेग-संहारिणे नमः १७९ नीलांबरधराय नमः १८०
प्रभवे नमः १८१ विभवे नमः १८२
शरासनाय नमः १८३ धन्विने नमः १८४
गणेशाय नमः १८५ गणनायकाय नमः १८६
लक्ष्मणाय नमः १८७ लक्षणाय नमः १८८
लक्ष्याय नमः १८९ रक्षोवंशविनाशनाय नमः १९०
वामनाय नमः १९१ वामनीभूताय नमः १९२
बलिजिते नमः १९३ विक्रमत्रयाय नमः १९४
यशोदानंदनाय नमः १९५ कर्त्रे नमः १९६
यमलार्जुनमुक्तिदाय नमः १९७ उलूखलिने नमः १९८
महामानिने नमः १९९ दामबद्धाह्वयिने नमः २००
शमिने नमः २०१ भक्तानुकारिणे नमः २०२
भगवते नमः २०३ केशवाय नमः २०४
अचलधारकाय नमः २०५ केशिघ्ने नमः २०६
मधुघ्ने नमः २०७ मोहिने नमः २०८
वृषासुर-विघातकायनमः २०९ अघासुर-विनाशिने नमः २१०
पूतनामोक्षदायकाय नमः २११ कुब्जाविनोदिने नमः २१२
भगवते नमः २१३ कंस मृत्यवे नमः २१४
महामखिने नमः २१५ अश्वमेधाय नमः २१६
वाजपेयाय नमः २१७ गोमेधाय नमः २१८
नरमेधवते नमः २१९ कंदर्पकोटिलावण्यायनमः २२०
चंद्रकोटि सुशीतलायनमः २२१ रविकोटिप्रतीकाशायनमः २२२

वायुकोटिमहाबलायनमः २२३ ब्रह्मणे नमः २२४
ब्रह्माण्डकर्त्रे नमः २२५ कमलावांछितप्रदायनमः २२६
कमलिने नमः २२७ कमलाक्षाय नमः २२८
कमलामुखलोलुपायनमः २२९ कमलाव्रतधारिणे नमः २३०
कमलाभाय नमः २३१ पुरंदराय नमः २३२
सौभाग्याधिकचित्तायनमः २३३ महामायिने नमः २३४
महोत्कटाय नमः २३५ तारकारये नमः २३६
सुरत्रात्रे नमः २३७ मारीचक्षोभकारकायनमः २३८
विश्वामित्रप्रियाय नमः २३९ दान्ताय नमः २४०
रामाय नमः २४१ राजीवलोचनाय नमः २४२
लंकाधिपकुलध्वंसिनेनमः २४३ बिभीषणवरप्रदाय नमः २४४
सीतानंदकराय नमः २४५ रामाय नमः २४६
वीराय नमः २४७ वारिधि बंधनाय नमः २४८
खरदूषणसंहारिणे नमः २४९ साकेतपुरवासनाय नमः २५०
चंद्रावलीपतये नमः २५१ कूलाय नमः २५२
केशीकंसवधाय नमः २५३ अमराय नमः २५४
माधविने नमः २५५ मधुघ्ने नमः २५६
माध्विने नमः २५७ माध्वीकाय नमः २५८
माधवाय नमः २५९ मधवे नमः २६०
मुंजाटवीगाहमानायनमः २६१ धेनुकारये नमः २६२
धरात्मजाय नमः २६३ वंशिने नमः २६४
वटविहारिणे नमः २६५ गोवर्धनवनाश्रयाय नमः २६६

तालवनोद्देशिने नमः २६७ भांडीरवनशंखघ्ने नमः २६८
तृणावर्तकथाकारिणेनमः २६९ वृषभानुसुतापतये नमः २७०
राधाप्राणसमाय नमः २७१ राधावदनाब्जमधुव्रताय नमः २७२
गोपीरंजनदैवज्ञाय नमः २७३ लीलाकमलपूजितायनमः२७४
क्रीडाकमलसंदोहायनमः२७५ गोपिकाप्रीतिरंजनायनमः२७६
रंजकाय नमः २७७ रंजनाय नमः २७८
रंगाय नमः २७९ रंगिने नमः २८०
रंगमहीरुहाय नमः २८१ कामाय नमः २८२
कामारिभक्ताय नमः २८३ पुराण पुरुषाय नमः २८४
कवये नमः २८५ नारदाय नमः २८६
देवलाय नमः २८७ भीमाय नमः २८८
बालाय नमः २८९ बालमुखांबुजाय नमः २९०
अंबुजाय नमः २९१ ब्रह्मसाक्षिणे नमः २९२
योगिदत्तवराय नमः २९३ मुनये नमः २९४
ऋषभाय नमः २९५ पर्वताय नमः २९६
ग्रामाय नमः २९७ नदी पवनवल्लभाय नमः २९८
पद्मनाभाय नमः २९९ सुरज्येष्ठाय नमः ३००
ब्रह्मणे नमः ३०१ रुद्राय नमः ३०२
अहिभूषिताय नमः ३०३ गणानांत्राणकर्त्रे नमः ३०४
गणेशाय नमः ३०५ ग्रहिलाय नमः ३०६

ग्रहिणे नमः ३०७ गणाश्रयाय नमः ३०८
गणाध्यक्षाय नमः ३०९ क्रोडोकृत जगत्रयाय नमः ३१०
यादवेंद्राय नमः ३११ द्वारकेंद्राय नमः ३१२
मथुरावल्लभाय नमः ३१३ धुरिणे नमः ३१४
भ्रमराय नमः ३१५ कुन्तलिने नमः ३१६
कुन्तीसुतरक्षिणे नमः ३१७ महामखिने नमः ३१८
यमुनावरदात्रे नमः ३१९ काश्यपस्यवरप्रदाय नमः ३२०
शंखचूडवधोद्दामायनमः ३२१ गोपीरक्षणतत्पराय नमः ३२२
पाँच जन्यकराय नमः ३२३ रामिणे नमः ३२४
त्रिरामिणे नमः ३२५ वनजाय नमः ३२६
अजयाय नमः ३२७ फाल्गुनाय नमः ३२८
फाल्गुन सखाय नमः ३२९ विराधवधकारकायनमः ३३०
रुक्मिणीप्राणनाथायनमः ३३१ सत्यभामाप्रियंकरायनमः ३३२
कल्पवृक्षाय नमः ३३३ महावृक्षाय नमः ३३४
दानवृक्षाय नमः ३३५ महाफलाय नमः ३३६
अंकुशाय नमः ३३७ भू-सुराय नमः ३३८
भामाय नमः ३३९ भामकाय नमः ३४०
भ्रामकाय नमः ३४१ हरये नमः ३४२
सरलाय नमः ३४३ शाश्वताय नमः ३४४
वीराय नमः ३४५ यदुवंशिने नमः ३४६
शिवात्मकाय नमः ३४७ प्रद्युम्नाय नमः ३४८

बलकर्त्रे नमः ३४९ प्रहर्त्रे नमः ३५०
दैत्यघ्ने नमः ३५१ प्रभवे नमः ३५२
महाधनाय नमः ३५३ महावीराय नमः ३५४
वनमालाविभूषणायनमः ३५५ तुलसीदामशोभाढ्याय नमः ३५६
जालंधरविनाशनाय नमः ३५७ शराय नमः ३५८
सूर्याय नमः ३५९ मृकंडाय नमः ३६०
भास्कराय नमः ३६१ विश्वपूजिताय नमः ३६२
रवये नमः ३६३ तमोघ्ने नमः ३६४
वह्नये नमः ३६५ वाडवाय नमः ३६६
वडवानलाय नमः ३६७ दैत्यदर्पविनाशिने नमः ३६८
गरुडाय नमः ३६९ गरुडाग्रजाय नमः ३७०
गोपीनाथाय नमः ३७१ महीनाथाय नमः ३७२
वृंदानाथाय नमः ३७३ अवरोधकाय नमः ३७४
प्रपंचिने नमः ३७५ पंचरूपाय नमः ३७६
लतागुल्माय नमः ३७७ गोपतये नमः ३७८
गंगारूपाय नमः ३७९ यमुनारूपाय नमः ३८०
गोदारूपाय नमः ३८१ वेत्रवती रूपाय नमः ३८२
कावेरी रूपाय नमः ३८३ नर्मदा रूपाय नमः ३८४
तापी रूपाय नमः ३८५ गंडकी रूपाय नमः ३८६
सरयू रूपाय नमः ३८७ राजसाय नमः ३८८
तामसाय नमः ३८९ सत्त्विने नमः ३९०

सर्वांगिणे नमः ३९१ सर्वलोचनाय नमः ३९२
सुधामयाय नमः ३९३ अमृतमयाय नमः ३९४
योगिनीवल्लभाय नमः ३९५ शिवाय नमः ३९६
बुद्धाय नमः ३९७ बुद्धिमतांश्रेष्ठाय नमः ३९८
विष्णवे नमः ३९९ जिष्णवे नमः ४००
शचीपतये नमः ४०१ वंशिने नमः ४०२
वंशधराय नमः ४०३ लोकाय नमः ४०४
विलोकाय नमः ४०५ मोहनाशनाय ४०६
रवरावाय नमः ४०७ रवाय नमः ४०८
रावाय नमः ४०९ बालाय नमः ४१०
बालबलाहकाय नमः ४११ शिवाय नमः ४१२
रुद्राय नमः ४१३ नलाय नमः ४१४
नीलाय नमः ४१५ लांगूलिने नमः ४१६
लांगूलाश्रयाय नमः ४१७ पारदाय नमः ४१८
पावनाय नमः ४१९ हंसाय नमः ४२०
हंसारूढाय नमः ४२१ जगत्पतये नमः ४२२
मोहिनीमोहनाय नमः ४२३ मायिने नमः ४२४
महामायाग्र नमः ४२५ महामखिने नमः ४२६
वृषाय नमः ४२७ वृषा कपये नमः ४२८
कालाय नमः ४२९ कालीदमनकारकायनमः ४३०
कुब्जाभाग्यप्रदाय नमः ४३१ वीराय नमः ४३२

रजकक्षयकारकायनमः ४३३ कोमलाय नमः ४३४
वारुणाय नमः ४३५ राज्ञे नमः ४३६
जलजाय नमः ४३७ जलधारकाय नमः ४३८
हारकाय नमः ४३९ सर्वपापघ्नाय नमः ४४०
परमेष्ठिने नमः ४४१ पितामहाय नमः ४४२
खड्गधारिणे नमः ४४३ कृपाकारिणे नमः ४४४
राधारमणसुन्दरायनमः ४४५ द्वादशारण्यसंभोगिनेनमः ४४६
शेषनागफणालयायनमः ४४७ कामाय नमः ४४८
श्यामाय नमः ४४९ सुखाय नमः ४५०
श्रीदाय नमः ४५१ श्रीपतये नमः ४५२
श्रीनिधिकृतये नमः ४५३ हरये नमः ४५४
हराय नमः ४५५ नराय नमः ४५६
नाराय नमः ४५७ नरोत्तमाय नमः ४५८
इषुप्रियाय नमः ४५९ गोपालाय नमः ४६०
चित्तहर्त्रे नमः ४६१ कर्त्रे नमः ४६२
संसारतारकाय नमः ४६३ आदिदेवाय नमः ४६४
महादेवाय नमः ४६५ गौरीगुरवे नमः ४६६
अनाश्रयाय नमः ४६७ साधवे नमः ४६८
मधवे नमः ४६९ विधवे नमः ४७०
धात्रे नमः ४७१ भ्रात्रे नमः ४७२
अक्रूर परायणाय नमः ४७३ रोलंबिने नमः ४७४

हयग्रीवाय नमः ४७५ वानरारये नमः ४७६
वनाश्रयाय नमः ४७७ वनाय नमः ४७८
वनिने नमः ४७९ वनाध्यक्षाय नमः ४८०
महावंद्याय नमः ४८१ महामुनये नमः ४८२
स्यमंतकमणिप्राज्ञायनमः४८३ विज्ञाय नमः ४८४
विघ्नविघातकाय नमः ४८५ गोवर्धनाय नमः ४८६
वर्धनीयाय नमः ४८७ वर्धनिने नमः ४८८
वर्धनप्रियाय नमः ४८९ वर्धन्याय नमः ४९०
वर्धनाय नमः ४९१ वर्धिने नमः ४९२
वार्धिन्याय नमः ४९३ सुमुख प्रियाय नमः ४९४
वर्धिताय नमः ४९५ वृद्धकाय नमः ४९६
वृद्धाय नमः ४९७ वृंदारकजनप्रियाय नमः ४९८
गोपालरमणीभर्त्रे नमः ४९९ सांबकुष्टविनाशनायनमः ५००
रुक्मिणीहरणाय नमः ५०१ प्रेम प्रेमिणे नमः ५०२
चंद्रावलीपतये नमः ५०३ श्रीकर्त्रे नमः ५०४
विश्वभर्त्रे नमः ५०५ नारायणनराय नमः ५०६
बलिने नमः ५०७ गणाय नमः ५०८
गणपतये नमः ५०९ दत्तात्रेयाय नमः ५१०
महामुनये नमः ५११ व्यासाय नमः ५१२
नारायणाय नमः ५१३ दिव्याय नमः ५१४
भव्याय नमः ५१५ भावुकधारकाय नमः ५१६

श्वसे नमः ५१७
श्रेयसाय नमः ५१८
शिवाय नमः ५१९
भद्राय नमः ५२०
भावुकाय नमः ५२१
भविकाय नमः ५२२
शुभाय नमः ५२३
शुभात्मकाय नमः ५२४
शुभाय नमः ५२५
शास्त्रे नमः ५२६
प्रशास्त्रे नमः ५२७
मेघनादघ्ने नमः ५२८
ब्रह्मण्यदेवाय नमः ५२९
दीनानामुद्धार करण क्षमाय नमः ५३०

कृष्णाय नमः ५३१
कमलपत्राक्षाय नमः ५३२
कृष्णाय नमः ५३३
कमललोचनाय नमः ५३४
कृष्णाय नमः ५३५
कामिने नमः ५३६
सदाकृष्णाय नमः ५३७
समस्तप्रियकारकायनमः ५३८
नंदाय नमः ५३९
नंदिने नमः ५४०
महानंदिने नमः ५४१
मादिने नमः ५४२
मादनकाय नमः ५४३
किलिने नमः ५४४
मिलिने नमः ५४५
हिलिने नमः ५४६
गिलिने नमः ५४७
गोलिने नमः ५४८
गोलाय नमः ५४९
गोलालयाय नमः ५५०
गुलिने नमः ५५१
गुग्गुलिने नमः ५५२
मारकिने नमः ५५३
शाखिने नमः ५५४
वटाय नमः ५५५
पिप्पलकाय नमः ५५६
कृतिने नमः ५५७
म्लेच्छघ्ने नमः ५५८

कालहर्त्रे नमः ५५९ यशोदायशसे नमः ५६०
अच्युताय नमः ५६१ केशवाय नमः ५६२
विष्णवे नमः ५६३ हरये नमः ५६४
सत्याय नमः ५६५ जनार्दनाय नमः ५६६
हंसाय नमः ५६७ नारायणाय नमः ५६८
लीलाय नमः ५६९ नीलाय नमः ५७०
भक्तिपरायणाय नमः ५७१ जानकीवल्लभाय नमः ५७२
रामाय नमः ५७३ विरामाय नमः ५७४
विघ्ननाशनाय नमः ५७५ सहस्रांशवे नमः ५७६
महाभानवे नमः ५७७ वीरबाहवे नमः ५७८
महोदधये नमः ५७९ समुद्राय नमः ५८०
अब्धये नमः ५८१ अकूपाराय नमः ५८२
पारावाराय नमः ५८३ सरित्पतये नमः ५८४
गोकुलानंदकारिणे नमः ५८५ प्रतिज्ञापरिपालकायनमः ५८६
सदारामाय नमः ५८७ कृपारामाय नमः ५८८
महारामाय नमः ५८९ धनुर्धराय नमः ५९०
पर्वताय नमः ५९१ पर्वताकाराय नमः ५९२
गयाय नमः ५९३ गेयाय नमः ५९४
द्विजप्रियाय नमः ५९५ कंबलाश्वतराय नमः ५९६
रामाय नमः ५९७ रामायणप्रवर्तकाय नमः ५९८
दिवे नमः ५९९ दिवाय नमः ६००

दिवसाय नमः ६०१ दिव्याय नमः ६०२
भव्याय नमः ६०३ भाविभयापहाय नमः ६०४
पार्वतीभाग्यसहितायनमः६०५ भ्रात्रे नमः ६०६
लक्ष्मीविलासवते नमः ६०७ विलासिने नमः ६०८
साहसिने नमः ६०९ सर्विणे नमः ६१०
गर्विणे नमः ६११ गर्वितलोचनाय नमः ६१२
मुरारये नमः ६१३ लोकधर्मज्ञाय नमः ६१४
जीवनाय नमः ६१५ जीवनांतकाय नमः ६१६
यमाय नमः ६१७ यमादये नमः ६१८
यमनाय नमः ६१९ यामिने नमः ६२०
यामविधायकाय नमः ६२१ वंसुलिने नमः ६२२
पांसुलिने नमः ६२३ पांसवे नमः ६२४
पांडवे नमः ६२५ अर्जुनवल्लभाय नमः ६२६
ललिता चंद्रिकामालिने नमः ६२७ मालिने नमः ६२८
मालांबुजाश्रयाय नमः ६२९ अंबुजाक्षाय नमः ६३०
महायक्षाय नमः ६३१ दक्षाय नमः ६३२
चिंतामणिप्रभते नमः ६३३ मणये नमः ६३४
दिनमणये नमः ६३५ केदाराय नमः ६३६
बदरीश्रयाय नमः ६३७ बदरीवन संप्रीताय नमः ६३८
व्यासाय नमः ६३९ सत्यवतीसुताय नमः ६४०
अमरारिनिहंत्रे नमः ६४१ सुधासिंधवे नमः ६४२
विधूदयाय नमः ६४३ चंद्राय नमः ६४४

रवये नमः ६४५
शिवाय नमः ६४६
शूलिने नमः ६४७
चक्रिणे नमः ६४८
गदाधराय नमः ६४९
श्रीकर्त्रे नमः ६५०
श्रीपतये नमः ६५१
श्रीदाय नमः ६५२
श्रीदेवाय नमः ६५३
देवकीसुताय नमः ६५४
श्रीपतये नमः ६५५
पुंडरीकाक्षाय नमः ६५६
पद्मनाभाय नमः ६५७
जगत्पतये नमः ६५८
वासुदेवाय नमः ६५९
अप्रमेयात्मने नमः ६६०
केशवाय नमः ६६१
गरुडध्वजाय नमः ६६२
नारायणाय नमः ६६३
परंधाम्ने नमः ६६४
देवदेवाय नमः ६६५
महेश्वराय नमः ६६६
चक्रपाणये नमः ६६७
कलापूर्णाय नमः ६६८
वेदवेद्याय नमः ६६९
दयानिधये नमः ६७०
भगवते नमः ६७१
सर्वभूतेशाय नमः ६७२
गोपालाय नमः ६७३
सर्वपालकाय नमः ६७४
अनंताय नमः ६७५
निर्गुणाय नमः ६७६
अनंताय नमः ६७७
निर्विकल्पाय नमः ६७८
निरंजनाय नमः ६७९
निराधाराय नमः ६८०
निराकाराय नमः ६८१
निराभासाय नमः ६८२
निराश्रयाय नमः ६८३
पुरुषाय नमः ६८४
प्रणवातीताय नमः ६८५
मुकुंदाय नमः ६८६
परमेश्वराय नमः ६८७
क्षणावनये नमः ६८८
सार्वभौमाय नमः ६८९
वैकुंठाय नमः ६९०

भक्तवत्सलाय नमः ६९१ विष्णवे नमः ६९२
दामोदराय नमः ६९३ कृष्णाय नमः ६९४
माधवाय नमः ६९५ मथुरापतये नमः ६९६
देवकीगर्भसंभूताय नमः ६९७ यशोदावत्सलाय नमः ६९८
हरये नमः ६९९ शिवाय नमः ७००
संकर्षणाय नमः ७०१ शंभवे नमः ७०२
भूतनाथाय नमः ७०३ दिवस्पतये नमः ७०४
अव्ययाय नमः ७०५ सर्वधर्मज्ञाय नमः ७०६
निर्मलाय नमः ७०७ निरुपद्रवाय नमः ७०८
निर्वाण नायकाय नमः ७०९ नित्याय नमः ७१०
नीलजीमूतसंनिभायनमः ७११ कलाक्षयाय नमः ७१२
सर्वज्ञाय नमः ७१३ कमलारूपतत्पराय नमः ७१४
हृषीकेशाय नमः ७१५ पीतवाससे नमः ७१६
वसुदेवप्रियात्मजायनमः ७१७ नंदगोपकुमारार्याय नमः ७१८
नवनीताशनाय नमः ७१९ प्रभवे नमः ७२०
पुराणपुरुषाय नमः ७२१ श्रेष्ठाय नमः ७२२
शंखपाणये नमः ७२३ सुविक्रमाय नमः ७२४
अनिरुद्धाय नमः ७२५ चक्ररथाय नमः ७२६
शार्ङ्गपाणये नमः ७२७ चतुर्भुजाय नमः ७२८
गदाधराय नमः ७२९ सुरातिघ्नाय नमः ७३०
गोविंदाय नमः ७३१ नंदकायुधाय नमः ७३२
वृन्दावनचराय नमः ७३३ शौरये नमः ७३४

वेणुवाद्यविशारदायनमः ७३५ तृणावर्तांतकाय नमः ७३६
भीमसाहसाय नमः ७३७ बहुविक्रमाय नमः ७३८
शकटासुरसंहारिणे नमः ७३९ बकासुरविनाशनायनमः ७४०
धेनुकासुरसंघातायनमः ७४१ पूतनारये नमः ७४२
नृकेसरिणे नमः ७४३ पितामहाय नमः ७४४
गुरवे नमः ७४५ साक्षिणे नमः ७४६
प्रत्यगात्मने नमः ७४७ सदाशिवाय नमः ७४८
अप्रमेयप्रभवे नमः ७४९ प्राज्ञाय नमः ७५०
अप्रतर्क्याय नमः ७५१ स्वप्नवर्धनाय नमः ७५२
धन्याय नमः ७५३ मान्याय नमः ७५४
भवाय नमः ७५५ भावाय नमः ७५६
धीराय नमः ७५७ शान्ताय नमः ७५८
जगद्गुरवे नमः ७५९ अंतर्यामिने नमः ७६०
ईश्वराय नमः ७६१ दिव्याय नमः ७६२
दैवज्ञाय नमः ७६३ देवतागुरवे नमः ७६४
क्षीराब्धिशयनाय नमः ७६५ धात्रे नमः ७६६
लक्ष्मीवते नमः ७६७ लक्ष्मणाग्रजाय नमः ७६८
धात्रीपतये नमः ७६९ अमेयात्मने नमः ७७०
चंद्रशेखरपूजिताय नमः ७७१ लोकसाक्षिणे नमः ७७२
जगच्चक्षुषे नमः ७७३ पुण्यचरित्रकीर्तनायनमः ७७४
कोटिमन्मथसौंदर्यायनमः ७७५ जगन्मोहनविग्रहायनमः ७७६
मंदस्मिततमाय नमः ७७७ गोपाय नमः ७७८

गोपिकापरिवेष्टितायनमः७७९ फुल्लारविंदनयनायनमः७८०
चाणूरांघ्रिनिषूदनायनमः७८१ इंदीवरदलश्यामायनमः ७८२
बर्हिबर्हावतंसकाय नमः ७८३ मुरलीनिनदाह्लादायनमः७८४
दिव्यमालांबराश्रयायनमः७८५ सुकपोलयुगाय नमः ७८६
सुभ्रूयुगलाय नमः ७८७ सुललाटकाय नमः ७८८
कंबुग्रीवाय नमः ७८९ विशालाक्षाय नमः ७९०
लक्ष्मीवते नमः ७९१ शुभलक्षणाय नमः ७९२
पीनवक्षसे नमः ७९३ चतुर्बाहवे नमः ७९४
चतुर्मूर्तये नमः ७९५ त्रिविक्रमाय नमः ७९६
कलंकरहिताय नमः ७९७ शुद्धाय नमः ७९८
दुष्टशत्रुनिबर्हणाय नमः ७९९ किरीटकुन्डलधरायनमः ८००
कटकांगदमंडिताय नमः ८०१ मुद्रिकाभरणोपेतायनमः ८०२
कटिसूत्रविराजितायनमः८०३ मंजीररंजितपदाय नमः ८०४
सर्वाभरणभूषिताय नमः ८०५ विन्यस्तपादयुगलायनमः८०६
दिव्यमंगलविग्रहायनमः ८०७ गोपिकानयनानंदायनमः८०८
पूर्णचंद्रनिभाननाय नमः ८०९ समस्त जगदानंदसुन्दराय नमः ८१०
लोकनंदनाय नमः ८११ यमुनातीरसंचारिणेनमः ८१२
राधामन्मथवैभवायनमः ८१३ गोपनारीप्रियाय नमः ८१४
दांताय नमः ८१५ गोपीवस्त्रापहारकायनमः८१६
श्रृंगारमूर्तये नमः ८१७ श्रीधाम्ने नमः ८१८
तारकाय नमः ८१९ मूलकारणाय नमः ८२०
सृष्टिसंरक्षणोपायायनमः८२१ क्रूरासुर-विभंजनाय नमः ८२२

नरकासुरसंहारिणे नमः ८२३ मुरारये नमः ८२४
वैरिमर्दनाय नमः ८२५ आदितेयप्रियाय नमः ८२६
दैत्यभीकराय नमः ८२७ इंदुशेखराय नमः ८२८
जरासंधकुलध्वंसिनेनमः ८२९ कंसारातये नमः ८३०
सुविक्रमाय नमः ८३१ पुण्यश्लोकाय नमः ८३२
कीर्तनीनाय नमः ८३३ यादवेंद्राय नमः ८३४
जगन्नुताय नमः ८३५ रुक्मिणीरमणाय नमः ८३६
सत्यभामाजांबवती प्रियाय नमः ८३७ मित्रविंदानाग्नजिती लक्ष्मणा-समुपासिताय नमः ८३८
सुधाकरकुलेजातायनमः ८३९ अनंतप्रबलविक्रमायनमः ८४०
सर्वसौभाग्यसंपन्नायनमः८४१ द्वारकायामुपस्थितायनमः८४२
भद्रासूर्यसुतानाथायनमः८४३ लीलामानुषविग्रहायनमः८४४
सहस्रषोडशस्त्रीशायनमः८४५ भोगमोक्षैकदायकायनमः८४६
वेदांत वेद्याय नमः ८४७ संवेद्याय नमः ८४८
वेधब्रह्माण्डनायकायनमः८४९ गोवर्धनधराय नमः ८५०
नाथाय नमः ८५१ सर्वजीवदयापराय नमः ८५२
मूर्तिमते नमः ८५३ सर्वभूतात्मने नमः ८५४
आर्तत्राणपरायणायनमः ८५५ सर्वज्ञाय नमः ८५६
सर्वसुलभाय नमः ८५७ सर्वशास्त्रविशारदायनमः८५८
षड्गुणैश्वर्यसंपन्नायनमः८५९ पूर्णकामाय नमः ८६०
धुरधराय नमः ८६१ महानुभावाय नमः ८६२
कैवल्यदायकाय नमः ८६३ लोकनायकाय नमः ८६४

आदिमध्यांतरहितायनमः ८६५ शुद्धसात्त्विकविग्रहायनमः ८६६
असमानाय नमः ८६७ समस्तात्मने नमः ८६८
शरणागतवत्सलायनमः ८६९ उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणाय नमः ८७०
सर्वकारणाय नमः ८७१ गंभीराय नमः ८७२
सर्वभावज्ञाय नमः ८७३ सच्चिदानंदविग्रहायनमः ८७४
विश्वक्सेनाय नमः ८७५ सत्यसंधाय नमः ८७६
सत्यवते नमः ८७७ सत्यविक्रमाय नमः ८७८
सत्यव्रताय नमः ८७९ सत्यसंज्ञाय नमः ८८०
सर्वधर्मपरायणायनमः ८८१ आपन्नार्तिप्रशमनायनमः ८८२
द्रोपदीमानरक्षकायनमः ८८३ कंदर्पजनकाय नमः ८८४
प्राज्ञाय नमः ८८५ जगन्नाटकवैभवाय नमः ८८६
भक्तिवश्याय नमः ८८७ गुणातीताय नमः ८८८
सर्वैश्वर्यप्रदायकाय नमः ८८९ दमघोषसुतद्वेषिणे नमः ८९०
बाणबाहुविखंडनायनमः ८९१ भीष्मभक्तिप्रदाय नमः ८९२
दिव्याय नमः ८९३ कौरवान्वयनाशकायनमः ८९४
कौंतेयप्रियबंधवे नमः ८९५ पार्थस्यंदनसारथये नमः ८९६
नारसिंहाय नमः ८९७ महावीराय नमः ८९८
स्तंभजाताय नमः ८९९ महाबलाय नमः ९००
प्रह्लादवरदाय नमः ९०१ सत्याय नमः ९०२
देवपूज्याय नमः ९०३ भयंकराय नमः ९०४
उपेंद्राय नमः ९०५ इंद्रावरजाय नमः ९०६

वामनाय नमः ९०७ बलिबंधनाय नमः ९०८
गजेंद्रवरदाय नमः ९०९ स्वामिने नमः ९१०
सर्वदेवनमस्कृताय नमः ९११ शेषपर्यंकशयनाय नमः ९१२
वैनतेयरथाय नमः ९१३ जयिने नमः ९१४
अव्याहतबलैश्वर्यसंपन्नाय नमः ९१५ पूर्णमानसाय नमः ९१६
योगेश्वरेश्वराय नमः ९१७ साक्षिणे नमः ९१८
क्षेत्रज्ञाय नमः ९१९ ज्ञानदायकाय नमः ९२०
योगिहृत्पंकजावासाय नमः ९२१ योगमायासमन्विताय नमः ९२२
नादबिंदुकलातीतायनमः ९२३ चतुर्वर्गफलप्रदाय नमः ९२४
सुषुम्नामार्गसंचारिणे नमः ९२५ संदेहस्यांतरस्थितायनमः ९२६
देहेंद्रियमनःप्राणसाक्षिणे नमः ९२७ चेतः प्रसादकाय नमः ९२८
सूक्ष्माय नमः ९२९ सर्वगताय नमः ९३०
देहिने नमः ९३१ ज्ञानदर्पणगोचराय नमः ९३२
तत्वत्रयात्मकाय नमः ९३३ अव्यक्ताय नमः ९३४
कुंडलीसमुपाश्रितायनमः ९३५ ब्रह्मण्याय नमः ९३६
सर्वधर्मज्ञाय नमः ९३७ शांताय नमः ९३८
दांताय नमः ९३९ गतक्लमाय नमः ९४०
श्रीनिवासाय नमः ९४१ सदानंदिने नमः ९४२
विश्वमूर्तये नमः ९४३ महाप्रभवे नमः ९४४
सहस्राशीर्ष्णे नमः ९४५ पुरुषाय नमः ९४६

सहस्राक्षाय नमः ९४७ सहस्रपदे नमः ९४८
समस्तभुवनाधारायनमः९४९ समस्तप्राणरक्षकायनमः ९५०
समस्तसर्वभावज्ञाय नमः ९५१ गोपिकाप्राणवल्लभाय नमः ९५२
नित्योत्सवाय नमः ९५३ नित्यसौख्याय नमः ९५४
नित्यश्रिये नमः ९५५ नित्यमंगलाय नमः ९५६
व्यूहार्चिताय नमः ९५७ जगन्नाथाय नमः ९५८
श्रीवैकुंठपुराधिपायनमः९५९ पूर्णानंदघनीभूताय नमः ९६०
गोपवेषधराय नमः ९६१ हरये नमः ९६२
कलापकुसुमश्यामायनमः९६३ कोमलाय नमः ९६४
शांतविग्रहाय नमः ९६५ गोपांगनावृताय नमः ९६६
अनंताय नमः ९६७ वृंदावनसमाश्रयायनमः ९६८
वेणुवादरताय नमः ९६९ श्रेष्ठाय नमः ९७०
देवानांहितकरायनमः ९७१ बालक्रीडासमासक्तायनमः ९७२
नवनीतस्यतस्करायनमः ९७३ गोपालकामिनीजारायनमः९७४
चोरजारशिखामणयेनमः९७५ परंज्योतिषे नमः ९७६
पराकाशाय नमः ९७७ परावासाय नमः ९७८
परिस्फुटाय नमः ९७९ अष्टादशाक्षराय नमः ९८०
मंत्राय नमः ९८१ व्यापकाय नमः ९८२
लोकपावनाय नमः ९८३ सप्तकोटिमहामंत्रशेखराय नमः ९८४
देवशेखराय नमः ९८५ विज्ञानज्ञानसंधानायनमः ९८६
तेजोराशये नमः ९८७ जगत्पतये नमः ९८८

भक्तलोकप्रसन्नात्मनेनमः९८९ भक्तमंदारविग्रहाय नमः ९९०
भक्तदारिद्र्यदमनायनमः९९१ भक्तानांप्रीतिदायकायनमः९९२
भक्ताधीनमनसे नमः ९९३ पूज्याय नमः ९९४
भक्तलोकशिवंकरायनमः९९५ भक्ताभीष्टप्रदाय नमः ९९६
सर्वभक्ताघौघनिकृंतनाय नमः ९९७ अपारकरुणासिंधवे नमः ९९८
भगवते नमः ९९९ भक्ततत्पराय नमः १०००

इति श्री समोहनतंत्रे पार्वतीश्वरसंवादे
श्री गोपाल सहस्रनाम स्तोत्रांतर्गता
श्री गोपालसहस्र नामावलिः समाप्ता ॥

वसुदेवसुतंदेवं कंसचाणूरमर्दनं
देवकी परमानंदं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥
कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने
प्रणतक्लेशनाशाय गोविंदाय नमो नमः
नामसंकीर्तनं यस्य सर्वपाप प्रणाशनं
प्रणामो दुःखशमनः तं नमामि हरिं परम् ॥
हरये नमः ॥ हरये नमः ॥ हरये नमः ॥
श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥
॥ समाप्तम् ॥

तेजकुमार बुकडिपो प्रा० लि०

लखनऊ